'कौल-कल्पतरु' चण्डी

६७ वर्षों से प्रकाशित आध्यात्मिक पुस्तक-माला

तन्त्रोक्त 'शब्द-ब्रह्म'

वर्ण-बीजाक्षर-साधना

प्रकाशक : परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

'अ-क-थ'-त्रिकोणात्मक श्री श्री गुरु-चक्र की जाग्रति

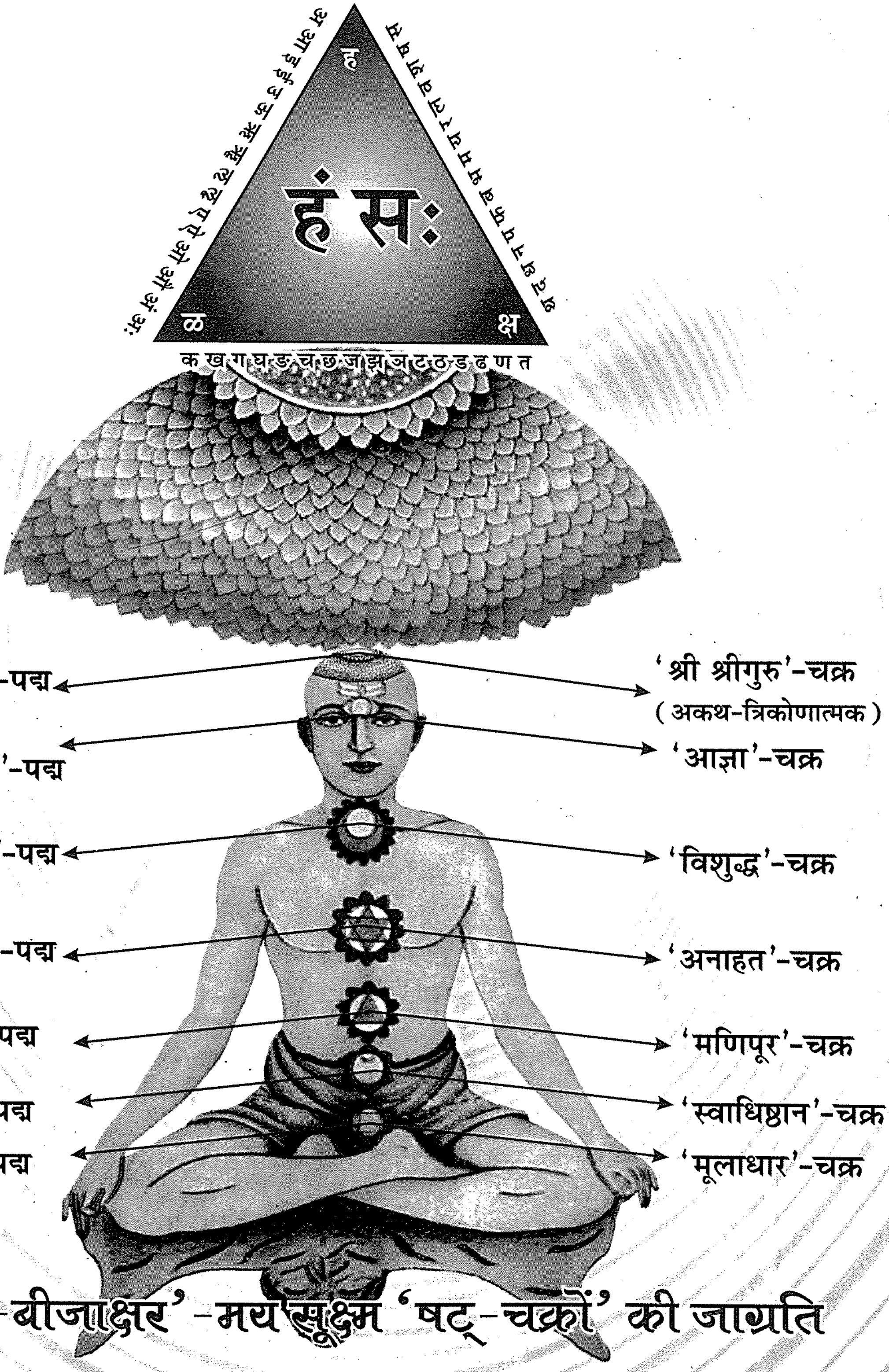

'वर्ण-बीजाक्षर'-मय सूक्ष्म 'षट्-चक्रों' की जाग्रति

वर्ष : ६८

'कौल-कल्पतरु' चण्डी
विशेष प्रस्तुति

अङ्क : ३

तन्त्रोक्त शब्द-ब्रह्म
वर्ण-बीजाक्षर-साधना

'अ'-कार से 'क्ष'-कार तक ५१ मातृकाएँ-ध्यान, मन्त्र एवं साधना

'गुप्तावतार' बाबाश्री श्रीपादुकाभ्यां नमो नमः

***

सम्पादक
रमादत्त शुक्ल
ऋतशील शर्मा

***

प्रकाशक
पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ०५३२-२५०२७८३

अनुदान ४०/-

‘वर्ण-बीजाक्षर-मातृका’-साधना के प्रणेता
‘गुप्तावतार’ बाबाश्री

आविर्भाव
श्रावण कृष्णा त्रयोदशी
सं० १९४१ वि०

१२५ वीं जयन्ती
सोमवार,
२० जुलाई, २००९

मन्त्र-योग

‘मन्त्र’ के साथ ‘मातृकाओं’ का जप करने से ‘शब्द-बीज’ का विस्फोट होता है और उसके तत्त्व का ध्यान करके साधक ‘देवता’ को अपने सम्मुख कर सकता है।

***

साधक जिस ‘देवता’ का ध्यान करता है, उस ‘देवता’ के गुण उसके मन में उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार नाना प्रकार के गुण उसके मन में उतरते-उतरते एक दिन साधक में स्थाई रूप से आ जाते हैं और साधक ‘देवता’-मय हो जाता है। अतः साधक को सदैव मन में दिव्य मातृकाओं का मनन कर अभीष्ट गुणों को उत्पन्न करना चाहिए।

***

जो साधक इस प्रकार ‘मन्त्र-योग’ को उचित रीति से करता है, वह ‘गुरु’ एवं ‘इष्ट’ की कृपा से ‘जीवन-मुक्त’ हो जाता है।

***

जिन साधकों में किसी दूसरे ‘योग’ के करने की सामर्थ्य नहीं होती, वे भी इस ‘मन्त्र-योग’ को सहजता के साथ सिद्ध कर सकते हैं।

तन्त्रोक्त शब्द-ब्रह्म
वर्ण-बीजाक्षर-साधना

अनुक्रम

दो शब्द..५
साधना-विधि..७
१. वर्ण-बीजाक्षर-'अ'-कार मातृका की साधना..१३
२. वर्ण-बीजाक्षर-'आ'-कार मातृका की साधना..१४
३. वर्ण-बीजाक्षर-'इ'-कार मातृका की साधना..१५
४. वर्ण-बीजाक्षर-'ई'-कार मातृका की साधना..१६
५. वर्ण-बीजाक्षर-'उ'-कार मातृका की साधना..१७
६. वर्ण-बीजाक्षर-'ऊ'-कार मातृका की साधना..१८
७. वर्ण-बीजाक्षर-'ऋ'-कार मातृका की साधना..१९
८. वर्ण-बीजाक्षर-'ॠ'-कार मातृका की साधना..२०
९. वर्ण-बीजाक्षर-'ऌ'-कार मातृका की साधना..२१
१०. वर्ण-बीजाक्षर-'ॡ'-कार मातृका की साधना..२२
११. वर्ण-बीजाक्षर-'ए'-कार मातृका की साधना..२३
१२. वर्ण-बीजाक्षर-'ऐ'-कार मातृका की साधना..२४
१३. वर्ण-बीजाक्षर-'ओ'-कार मातृका की साधना..२५
१४. वर्ण-बीजाक्षर-'औ'-कार मातृका की साधना..२६
१५. वर्ण-बीजाक्षर-'अं'-कार मातृका की साधना..२७
१६. वर्ण-बीजाक्षर-'अः'-कार मातृका की साधना..२८
१७. वर्ण-बीजाक्षर-'क'-कार मातृका की साधना..२९
१८. वर्ण-बीजाक्षर-'ख'-कार मातृका की साधना..३०
१९. वर्ण-बीजाक्षर-'ग'-कार मातृका की साधना..३१
२०. वर्ण-बीजाक्षर-'घ'-कार मातृका की साधना..३२
२१. वर्ण-बीजाक्षर-'ङ'-कार मातृका की साधना..३३
२२. वर्ण-बीजाक्षर-'च'-कार मातृका की साधना..३४
२३. वर्ण-बीजाक्षर-'छ'-कार मातृका की साधना..३५
२४. वर्ण-बीजाक्षर-'ज'-कार मातृका की साधना..३६

२५. वर्ण-बीजाक्षर–'झ'-कार मातृका की साधना ३७
२६. वर्ण-बीजाक्षर–'ञ'-कार मातृका की साधना ३८
२७. वर्ण-बीजाक्षर–'ट'-कार मातृका की साधना ३९
२८. वर्ण-बीजाक्षर–'ठ'-कार मातृका की साधना ४०
२९. वर्ण-बीजाक्षर–'ड'-कार मातृका की साधना ४१
३०. वर्ण-बीजाक्षर–'ढ'-कार मातृका की साधना ४२
३१. वर्ण-बीजाक्षर–'ण'-कार मातृका की साधना ४३
३२. वर्ण-बीजाक्षर–'त'-कार मातृका की साधना ४४
३३. वर्ण-बीजाक्षर–'थ'-कार मातृका की साधना ४५
३४. वर्ण-बीजाक्षर–'द'-कार मातृका की साधना ४६
३५. वर्ण-बीजाक्षर–'ध'-कार मातृका की साधना ४७
३६. वर्ण-बीजाक्षर–'न'-कार मातृका की साधना ४८
३७. वर्ण-बीजाक्षर–'प'-कार मातृका की साधना ४९
३८. वर्ण-बीजाक्षर–'फ'-कार मातृका की साधना ५०
३९. वर्ण-बीजाक्षर–'ब'-कार मातृका की साधना ५१
४०. वर्ण-बीजाक्षर–'भ'-कार मातृका की साधना ५२
४१. वर्ण-बीजाक्षर–'म'-कार मातृका की साधना ५३
४२. वर्ण-बीजाक्षर–'य'-कार मातृका की साधना ५४
४३. वर्ण-बीजाक्षर–'र'-कार मातृका की साधना ५५
४४. वर्ण-बीजाक्षर–'ल'-कार मातृका की साधना ५६
४५. वर्ण-बीजाक्षर–'व'-कार मातृका की साधना ५७
४६. वर्ण-बीजाक्षर–'श'-कार मातृका की साधना ५८
४७. वर्ण-बीजाक्षर–'ष'-कार मातृका की साधना ५९
४८. वर्ण-बीजाक्षर–'स'-कार मातृका की साधना ६०
४९. वर्ण-बीजाक्षर–'ह'-कार मातृका की साधना ६१
५०. वर्ण-बीजाक्षर–'ळ'-कार मातृका की साधना ६२
५१. वर्ण-बीजाक्षर–'क्ष'-कार मातृका की साधना ६३
परिशिष्ट-१ अक्ष-माला-स्तुतिः (मातृका-स्तुति) ६४
परिशिष्ट-२ 'अ' से लेकर 'क्ष' तक के सभी अक्षरों की आधार-स्वरूपा
श्री त्रि-वेणी देवी की स्तुति ६५-८०

दो शब्द

'**शुभ-कृत्**' संवत् २०६६ वि० के अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण पर्व '**श्रीगुरु-पूर्णिमा**' एवं '**गुप्तावतार बाबाश्री की १२५वीं जयन्ती**' के पावन अवसर पर यहाँ **तन्त्रोक्त शब्द-ब्रह्म-स्वरूपा** '**वर्ण-बीजाक्षर-मातृका**'-**साधना** एक स्वतन्त्र पुस्तक के रूप में प्रस्तुत हो रही है।

'**शब्द-ब्रह्म**' की उपासना-हमारे देश '**भारत**' की अत्यन्त प्राचीन एवं सर्वाधिक चर्चित उपासना है। '**प्रणव**' या '**ॐ-कार**' आदि के रूप में इसका वीज '**वेदों**' में है। '**उपनिषद्**' में इसके सम्बन्ध में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि-

द्वे वाव बह्मणो रूपे, शब्द-ब्रह्म परं च यत् । शाब्दे ब्रह्मणि निष्णातः, परं-ब्रह्माधिगच्छत् ।।

अर्थात् '**शब्द-ब्रह्म**' और '**पर-ब्रह्म**' दोनों एक हैं। जो '**शब्द-ब्रह्म**' का स्वरूप जान लेता है, वह '**पर-ब्रह्म**' के स्वरूप को हृदयङ्गम कर लेता है।

'**उपनिषदों**' की भाँति '**पाणिनि**' की '**अष्टाध्यायी**' में भी '**शब्द-ब्रह्म की उपासना**' के सूत्र स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। वहाँ कहा गया है कि-'**शब्द का व्यवहार अनादि, अनन्त और सनातन है।**'

मुनि पाणिनि के '**अष्टाध्यायी**' पर **पतञ्जलि** मुनि ने जो '**महा-भाष्य**' लिखा है, उसमें भी '**शब्द**' को न केवल स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है अपितु उसके सन्दर्भ में स्वतन्त्र रूप से पहले-पहल '**स्फोट-वाद**' का प्रतिपादन भी हुआ है।

पुराणों में भी स्पष्ट रूप से कहा गया है कि-'**शब्द-ब्रह्म परं ब्रह्म, नानयोर्भेद इष्यते।**' अर्थात् '**शब्द-ब्रह्म**' और '**पर-ब्रह्म**' में कोई भेद नहीं है।

यही नहीं, '**वैयाकरण**', '**नैयायिक**', '**मीमांसक**', '**वेदान्ती**'-प्रायः सभी भारतीय दार्शनिकों ने '**शब्दों**' के महत्त्व को स्वीकार किया है और उस पर दार्शनिक ढङ्ग से अपने-अपने विचार भी प्रस्तुत किए हैं।

'**वैयाकरणों**' के अनुसार-'**शब्द**' से ही '**अर्थ**' का बोध होता है और '**संसार का ज्ञान**' होता है। उसके अभाव में '**ज्ञान का प्रकाशत्व**' नष्ट हो जाता है। '**शब्द**' ही-सत्य है। आदि-आदि।

'**मीमांसकों**' के अनुसार-'**वर्ण**' नित्य हैं और ध्वनि से व्यक्त किए जाते हैं।

'**शाङ्कर वेदान्तियों**' ने तो और अधिक स्पष्ट रूप से '**शब्द-ब्रह्म**' को स्वीकार किया है, वे कहते हैं-'**शब्द**'-**तत्त्व** उसी प्रकार से विश्व का कारण है, जिस प्रकार से '**ब्रह्म**'-विश्व का कारण है।

'**शाङ्कर वेदान्तियों**' के बाद **काश्मीर के वसुगुप्त, अभिनव गुप्त एवं भर्तृहरि** जैसे अवतारी महा-पुरुषों ने सुन्दर उक्तियों के द्वारा '**शब्द-ब्रह्म की उपासना**' के सम्बन्ध में जो प्रकाश डाला है, उसके फल-स्वरूप ही विभिन्न '**तन्त्र**'-ग्रन्थों में इससे सम्बन्धित नाना प्रकार के विधि-विधान आज देखने को प्राप्त होते हैं।

'**काश्मीर**' के **अवतारी महा-पुरुषों** के अनुसार-'**निष्क्रिय ब्रह्म**' की अनन्त शान्त अवस्था में, उसकी स्वेच्छा से, '**शक्ति**' का स्फुरण अथवा '**स्पन्दन**' आरम्भ होता है। उससे '**नाद**' उत्पन्न होता है और वह जब घनीभूत हो '**बिन्दु**' का रूप धारण करता है, तभी उसका '**प्रसार**'-'**विमर्श**' होने लगता है। '**प्रसार**' के अन्तिम क्रम में **५० ध्वनियाँ-५० मातृका-वर्ण** ('अ'-से-'क्ष' तक) प्रकट होते हैं, जिन्हें '**मातृका**' अर्थात् '**प्यारी मैया**' कहते हैं।

शब्द-राशेर्भैरवस्य, यानुच्छूनतयान्तरी। सा मातेव भविष्यत्वात्, तेनासौ मातृकोदिता।।

अर्थात् '**शब्द**'-**राशि-रूपी भैरव** (**शब्द-ब्रह्म**) के अन्तर्गत स्पन्दित होनेवाली '**शक्ति**'-माता की तरह संसार को उत्पन्न करनेवाली है। वह '**मातृका**'-**प्यारी मैया** कहलाती है।

संसार को उत्पन्न करनेवाली उक्त '**मातृका**'-प्यारी मैया कैसी है? इसे स्पष्ट करते हुए **काश्मीर** के अवतारी **महा-पुरुष भगवान् वसुगुप्त** कहते हैं-'**ज्ञानाधिष्ठानं मातृका**'। अर्थात् यह ज्ञान का आधार है। अच्छे या बुरे सभी प्रकार के ज्ञान की जानकारी इसके द्वारा ही होती है। आवश्यकता है कि इसके द्वारा अपने लिए '**उपादेय**' को जाना जाए और '**हेय**' का परित्याग किया जाए।

लगभग इसी प्रकार से **अवतारी महा-पुरुष भगवान् भर्तृहरि** भी कहते हैं-

न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके, यः शब्दानुमादृते।
अनुविद्धमिव ज्ञानं, सर्वं शब्देन भासते।। ***(वाक्-पदी)***

अर्थात् सब कुछ '**शब्दों**' से ही प्रकट होता है।

साधना हेतु विशेष मुहूर्त :

प्रस्तुत '**वर्ण-बीजाक्षर-मातृका**'-साधना वैसे तो कभी भी की जा सकती है, किन्तु विशेष अनुभूतियों हेतु कुछ विशेष मुहूर्त भी हैं। यथा-

- ★ प्रत्येक मास में **शनिवार** अथवा **मङ्गलवार** के दिन।
- ★ **आषाढ़ पूर्णिमा** (**श्रीगुरु-पूर्णिमा**) के दिन।
- ★ **श्रावणी** अर्थात् **श्रावण की पूर्णिमा** के दिन।
- ★ **नवरात्र, होली, दीपावली** जैसे पर्व।
- ★ **सूर्य-ग्रहण, चन्द्र-ग्रहण** के दिन।

संक्षेप में, अत्यन्त प्राचीन काल से '**शब्द-ब्रह्म**'-सम्बन्धी उपर्युक्त जो विस्तृत विचार-विमर्श हमारे देश '**भारत**' में हुआ है, उसी के आधार पर '**तन्त्रों**' में सभी वर्ग के साधकों के लिए इससे सम्बन्धित विधि-विधानों एवं सिद्धान्तों का वर्णन हुआ है। सामान्य रूप से प्रायः सभी प्रधान '**तन्त्रों**' में इसकी चर्चा प्रारम्भ में ही देखने को प्राप्त होती है। '**कामधेनु तन्त्र**', '**मातृका-भेद तन्त्र**', '**वर्णोद्धार तन्त्र**', '**वर्ण-बीज-प्रकाश**', '**कङ्काल-मालिनी तन्त्र**' आदि में इसके सम्बन्ध में विशेष रूप से न केवल प्रकाश डाला गया है अपितु विशेष साधनाएँ भी बतायी गईं हैं।

उदाहरण के रूप में निम्न-लिखित कुछ उद्धरणों को देखिए। इनसे '**तन्त्रों**' का विशेष मन्तव्य भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है। यथा-

"**.....'अ'-कार से 'क्ष'-कार तक के वर्ण 'मातृका-वीज'-रूप हैं। यह 'मातृका-देवी' नाना विद्या-मयी तथा ब्रह्माण्ड-जननी है।.....**"

"**.....स्वयं परम कुण्डली ही 'अ'-कार से 'क्ष'-कार तक व्याप्त है। सारा चराचर विश्व 'वर्ण' से ओत-प्रोत है।**

"**.....यदि साधक 'बीज-वर्णों' का ध्यान अलग-अलग करता है, तो उसका परम कल्याण होता है।.....**"

'**तन्त्रों**' का उक्त गुप्त रहस्य आज से ६८ वर्ष पूर्व '**सद्-गुरुओं**' तक ही सीमित था। सन् १९४२ में जब '**चण्डी**'-पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ, तब **गुप्तावतार बाबाश्री** ने सभी **सद्-गुरुओं** से गोपनीय रहस्य को प्रकट करने के लिए '**आह्वान**' किया और '**मुमुक्षु मार्ग**' (**रहस्योद्‌घाटन**), '**श्री भैरवोपदेश**', '**सार्थ सौन्दर्य-लहरी**' में स्वयं इस '**गोपनीय विद्या**' को प्रकट किया, जिससे अनेकानेक साधक-बन्धु लाभान्वित हुए। यही नहीं, **बाबाश्री** के सूक्ष्म निर्देशानुसार ही '**चण्डी**' द्वारा इधर कई वर्षों से लगातार '**वर्ण-माला**' में '**जप**'-**विधान** को प्रस्तुत किया जा रहा है और आज उससे सम्बन्धित **साधना-विधि** सुन्दर पुस्तक के रूप में यहाँ दी जा रही है। आशा है कि इससे सभी साधक बन्धु लाभ उठाएँगे।

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग

-ऋतशील शर्मा

तन्त्रोक्त शब्द-ब्रह्म

वर्ण-बीजाक्षर-मातृकाओं की साधना-विधि

निवेदन

शब्दार्थ-ब्रह्म-स्वरूपा वर्ण-बीजाक्षर-मातृका-साधना वास्तविक रूप में सद्-गुरुओं द्वारा की जानेवाली अत्यन्त गुप्त सूत्रात्मक साधना रही है। 'तन्त्रों' में इसके सूत्र यत्र-तत्र संक्षिप्त रूप में दिखाई देते हैं। यहाँ 'नित्योत्सव', 'वृहत् तन्त्र-सार', 'काम-धेनु तन्त्र' एवं 'प्राण-तोषिणी तन्त्र' आदि के आधार पर एक 'साधना'-विधि दी जा रही है। आशा है कि आज जब जिज्ञासुओं को सद्-गुरु बहुत कठिनाई से मिलते हैं, तब सद्-गुरुओं की इस दुर्लभ विद्या से जिज्ञासु बन्धु विशेष रूप से लाभान्वित होंगे और 'शब्दार्थ-ब्रह्म-स्वरूपा : मन्त्र-विद्या' के महत्त्व से वे भली-भाँति परिचित भी होंगे।

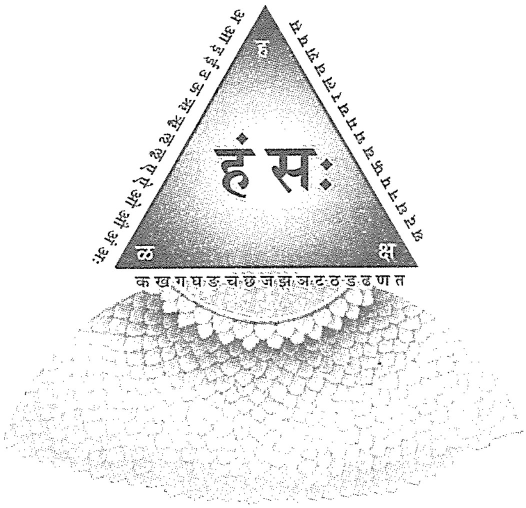

प्रस्तुत 'साधना'-विधि के पाँच खण्ड हैं। पहले खण्ड में अपने शरीर में, 'सहस्त्रार' में 'वर्ण -बीजाक्षर-मातृका'-मय 'गुरु'-तत्त्व का ध्यान-पूजन किया जाता है। दूसरे खण्ड में अपने शरीर से बाहर, 'वर्ण-बीजाक्षर-मातृका'-मय प्रपञ्च का न्यास किया जाता है। तीसरे खण्ड में पुनः अपने शरीर में, सूक्ष्म षट्-चक्रों में 'वर्ण-बीजाक्षर-मातृका' का न्यास किया जाता है। चौथे खण्ड में, अपने शरीर के स्थूल अङ्गों में 'वर्ण-बीजाक्षर-मातृका' का न्यास किया जाता है और पाँचवें खण्ड में, ५० वर्ण-बीजाक्षर-मातृका का ध्यान कर उनका मन्त्र जपते हुए, उनसे सम्पुटित इष्ट-मन्त्र का 'जप' किया जाता है तथा सुमेरु 'क्ष'-कार का ध्यान कर उसका मन्त्र जपा जाता है।

—ऋतशील शर्मा

१. सहस्रार में 'वर्ण-बीजाक्षर-मातृका'-मय 'गुरु-तत्त्व' का ध्यान-पूजन

१. सबसे पहले दोनों भौंहों के बीच अपनी '**भृकुटि**' का मन–ही–मन ध्यान करे।

२. फिर '**भृकुटि**' की सीध में पीछे '**मेरु-दण्ड**' के ऊर्ध्व–भाग में स्थित '**सुषुम्णा नाड़ी**' में दो दलोंवाले कमल–पुष्प के समान विकसित '**आज्ञा-चक्र**' का ध्यान करे।

३ '**आज्ञा-चक्र**' के ऊपर सिर के सबसे ऊर्ध्व–भाग, जहाँ शिखा–बन्धन करते हैं, '**ब्रह्म-रन्ध्र**' में एक हजार पँखुड़ियोंवाले अधो–मुख महा–कमल के समान विकसित '**सहस्रार-चक्र**' का ध्यान करे।

४ '**सहस्रार-चक्र**' को कमल–पुष्प की डण्डी या नाल–जैसी सूक्ष्म एवं आकर्षक '**सुषुम्णा नाड़ी**' से युक्त देखे, जिसमें '**चित्रिणी नाड़ी**'–'**कुण्डलिनी**'-शक्ति है और जो '**सहस्रार**' से '**मूलाधार-चक्र**' तक व्याप्त है।

५. '**सहस्रार**'-रूपी महा–कमल को सदा आनन्द–मय तथा उसकी पँखुड़ियों को सदा सभी शक्तियों से युक्त होने की भावना करे। श्वेत, रक्त, पीत, कृष्ण, हरित, चित्र–विचित्र, विविध प्रकार के रङ्गों से '**सहस्रार**'–रूपी महा–कमल की पँखुड़ियाँ सुशोभित हैं, ऐसा मन–ही–मन चिन्तन करे।

६ फिर '**सहस्रार**'–रूपी महा–कमल की सहस्र–पँखुड़ियों के बीच में ऊर्ध्व–मुख, गोलाकार–अमृत के सागर की भाँति विशाल, करोड़ों चन्द्रमा की प्रभा के समान सुन्दर '**बीज-कोष**' का मन–ही–मन ध्यान करे।

७. पुनः '**बीज-कोष**' में एक '**त्रिकोण**'–रूपी मण्डल का ध्यान करे, जिसकी तीनों भुजाओं में सभी **मातृका-वर्ण-बीजाक्षर** हों। यथा– '**त्रिकोण**'–रूपी मण्डल की बांईं भुजा के रूप में क्रमशः '**अ**' से लेकर '**अः**' तक १६ '**स्वर**'-**वर्ण-बीजाक्षरों का ध्यान** करे और ऊपरी भुजा के रूप में क्रमशः '**क**' से लेकर '**त**' तक के १६ '**व्यञ्जन**'-**वर्ण-बीजाक्षरों का ध्यान** करे तथा दाहिनी भुजा के रूप में '**थ**' से लेकर '**स**' तक के १६ '**व्यञ्जन**'-**वर्ण-बीजाक्षरों का ध्यान** करे।

'**त्रिकोण**'–रूपी मण्डल के भीतर ऊपर के कोण में '**ह**' **वर्ण-बीजाक्षर** का, बाँएँ कोण में '**ळ**' **वर्ण-बीजाक्षर** का तथा दाँएँ कोण में '**क्ष**' **वर्ण-बीजाक्षर** का मन–ही–मन ध्यान करना चाहिए।

पूरे '**त्रिकोण**'–मण्डल को '**योनि-पीठ**' अथवा '**शक्ति-पीठ**' की भाँति एक विलक्षण तेज–पुञ्ज के रूप में मन–ही–मन ध्यान करना चाहिए तथा वहाँ '**पराहन्ता**' अर्थात् अपनी शुद्ध अहन्ता को एक ऐसे '**श्वेत हंस**' के रूप में विराजमान देखना चाहिए, जिसका शरीर सभी प्रकार के '**ज्ञान**' से मय हो, जिसके दोनों पंख '**आगम**' (वेद) और '**निगम**' (तन्त्र) के समान हों और जिसके दोनों चरण–'**शिव-शक्ति**'–मय हों तथा जिसकी चोंच–'**प्रणव**' (ॐ)–स्वरूपा एवं आँख और कण्ठ–साक्षात् '**काम-कला**'–रूप हों।

८. इसके बाद उक्त विलक्षण हंस-रूपी 'पराहन्ता' के ठीक ऊपर **श्वेत-वर्ण वाग्भव-वीज 'ऐं'** का ध्यान करना चाहिए और इसी **वाग्भव-वीज 'ऐं' से समाहित श्रीगुरु-देव** का मन-ही-मन इस प्रकार ध्यान करना चाहिए कि उनके दो हाथ हैं-एक हाथ से वे '**वर**' दे रहे हैं और दूसरा हाथ '**अभय**'-मुद्रा से सुशोभित है। वे '**श्वेत-माला**' और '**श्वेत-गन्ध**' (चन्दन) धारण किए हुए हैं एवं **श्वेत-वस्त्रों** से शोभायमान हैं।

९. **श्री गुरु-देव** के बाँईं ओर **श्री गुरु-शक्त्यम्बा** लाल रङ्ग के वस्त्र पहने हुए और विविध आभूषणों से शोभित विराजमान हैं, ऐसा मन-ही-मन ध्यान करना चाहिए, साथ-ही-साथ यह चिन्तन करना चाहिए कि **श्री गुरु-देव** और **श्री गुरु-शक्त्यम्बा** दो स्वरूप दिखाई देते हैं, किन्तु वास्तव में वे दोनों एक ही हैं। इसके बाद, '**श्री गुरु-पादुका-मन्त्र**' का '**जप**' करना चाहिए। यथा-

- पहले ''**ऐं**''-इस बीज का मन में उच्चारण करते हुए **श्रीगुरु-देव** के बगल में **वाग्भव-बीज 'ऐं'** के स्वरूप को देखना चाहिए।
- फिर ''**ह्रीं**''-यह बीज मन में उच्चारण करते हुए **श्री गुरु-देव** के ऊपर '**ह्रीं**' के स्वरूप का दर्शन करना चाहिए।
- तब ''**श्रीं**''-यह बीज मन में बोलते हुए **श्री गुरु-शक्त्यम्बा** (श्री गुरु-शक्ति अम्बा) के दर्शन करना चाहिए।
- इसके बाद '**ह्-स्-ख्-फ्रें**'-इन चारों बीजों का **श्री गुरु-देव** की कटि (कमर) से ऊपर के शरीर को देखते हुए मन-ही-मन उच्चारण करना चाहिए।
- और '**ह्-स्-क्ष्-म्-ल्-व्-र्-यूँ**'-इन आठों बीजों का **श्री गुरु-देव** के कटि के नीचे श्री-चरणों तक के शरीर को देखते हुए मन-ही-मन उच्चारण करना चाहिए।
- पुनः '**स्-ह्-ख्- फ्रें**'-इन चार बीजों का **श्री गुरु-शक्त्यम्बा माँ** की कटि से ऊपर के शरीर को देखते हुए मन-ही-मन उच्चारण करना चाहिए।
- और '**स्-ह्-क्ष्-म्-ल्-व्- र्-यीं**'-इन आठों बीजों का **श्री गुरु-देव शक्त्यम्बा माँ** की कटि के नीचे श्री-चरणों तक के शरीर को देखते हुए मन-ही-मन उच्चारण करना चाहिए।
- इसके बाद '**हंसः**'- कहकर **श्री गुरु एवं श्री गुरु-शक्त्यम्बा** जिस विलक्षण '**हंस**'-रूपी **पराहन्ता** पर विराजमान हैं, उसका चिन्तन करना चाहिए।
- और '**सोऽहं**'- कहकर '**हंस**' के नीचे **श्री गुरु एवं श्री गुरु-शक्त्यम्बा की कृपा** से उत्पन्न '**नाद**' (ˇ) का चिन्तन करना चाहिए।
- तथा '**स्हौः**'- कहकर '**नाद**' (ˇ) के नीचे '**बिन्दु**' (·) का चिन्तन करना चाहिए।
- पुनः '**स्हौः**'-कहकर पूरे **सहस्त्र-दल पद्म** (हजार दलवाले कमल) का चिन्तन करना चाहिए और **सहस्त्रार** में सूक्ष्म-रूप से विराजमान **श्री गुरु-शक्त्यम्बा** एवं **श्री गुरु-देव** को मन-ही-मन **प्रणाम** करते हुए उनका **पूजन-तर्पण** करना चाहिए। यथा-
- '**श्री गुरु-शक्त्यम्बा-सहित श्री-श्रीनाथ-देव-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः**'।

२. 'वर्ण-बीजाक्षर-मातृका'-मय प्रपञ्च-न्यास

'सहस्त्रार' में उक्त प्रकार से पूजन करने के बाद अपने शरीर के बाहर 'वर्ण-बीजाक्षर-मातृका'-मय प्रपञ्च का न्यास करना चाहिए। यथा–

१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'अं' प्रपञ्च-रूपायै श्रियै नमः।
२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'आं' द्वीप-रूपायै मायायै नमः।
३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'इं' जलधि-रूपायै कमलायै नमः।
४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'ईं' गिरि-रूपायै विष्णु-वल्लभायै नमः।
५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'उं' पत्तन-रूपायै पद्म-धारिण्यै नमः।
७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'ऊं' पीठ-रूपायै समुद्र-तनयायै नमः।
८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'ऋं' क्षेत्र-रूपायै लोक-मात्रे नमः।
९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'ॠं' वन-रूपायै कमल-वासिन्यै नमः।
१०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'ऌं' आश्रम-रूपायै इन्दिरायै नमः।
११. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'ॡं' गुहा-रूपायै मायायै नमः।
१२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'एं' नदी-रूपायै रमायै नमः।
१३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'ऐं' चत्वर-रूपायै पद्मायै नमः।
१४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'ओं' उद्भिज्ज-रूपायै नारायण-प्रियायै नमः।
१५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'औं' स्वेदज-रूपायै सिद्ध-लक्ष्म्यै नमः।
१५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'अं' अण्डज-रूपायै राज-लक्ष्म्यै नमः।
१६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'अः' जरायुज-रूपायै महा-लक्ष्म्यै नमः।
१७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'कं' लव-रूपायै आर्यायै नमः।
१८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'खं' तृप्ति-रूपायै उमायै नमः।
१९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'गं' कला-रूपायै चण्डिकायै नमः।
२०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'घं' काष्ठा-रूपायै दुर्गायै नमः।
२१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'ङं' निमेष-रूपायै शिवायै नमः।
२२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'चं' श्वास-रूपायै अपर्णायै नमः।
२३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'छं' घटिका-रूपायै अम्बिकायै नमः।
२४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'जं' मुहूर्त्त-रूपायै सत्यै नमः।
२५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'झं' प्रहर-रूपायै ईश्वर्यै नमः।
२६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'ञं' दिवस-रूपायै शाम्भव्यै नमः।
२७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'टं' सन्ध्या-रूपायै ईशान्यै नमः।
२८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'ठं' रात्रि-रूपायै पार्वत्यै नमः।
२९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'डं' तिथि-रूपायै सर्व-मङ्गलायै नमः।
३०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'ढं' वार-रूपायै दाक्षायण्यै नमः।

३१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'णं' नक्षत्र-रूपायै हैमवत्यै नमः।
३२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'तं' योग-रूपायै महा-मायायै नमः।
३३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'थं' करण-रूपायै महेश्वर्यै नमः।
३४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'दं' पक्ष-रूपायै मृडान्यै नमः।
३५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'धं' मास-रूपायै रुद्राण्यै नमः।
३६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'नं' राशि-रूपायै शर्वाण्यै नमः।
३७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'पं' ऋतु-रूपायै परमेश्वर्यै नमः।
३८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'फं' अयन-रूपायै काल्यै नमः।
३९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'बं' वत्सर-रूपायै कात्यायन्यै नमः।
४०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'भं' युग-रूपायै गौर्यै नमः।
४१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'मं' प्रलय-रूपायै भवान्यै नमः।
४२. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'यं' पञ्च-भूत-रूपायै ब्राह्म्यै नमः।
४३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'रं' पञ्च-तन्मात्र-रूपायै वागीश्वर्यै नमः।
४४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'लं' पञ्च-कर्मेन्द्रिय-रूपायै वाण्यै नमः।
४५. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'वं' पञ्च-ज्ञानेन्द्रिय-रूपायै सावित्र्यै नमः।
४६. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'शं' पञ्च-प्राण-रूपायै सरस्वत्यै नमः।
४७. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'षं' गुण-त्रय-रूपायै गायत्र्यै नमः।
४८. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'सं' अन्तःकरण-चतुष्टय-रूपायै वाक्-प्रदायै नमः।
४९. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'हं' अवस्था-चतुष्टय-रूपायै शारदायै नमः।
५०. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'ळं' सप्त-धातु-रूपायै भारत्यै नमः।
५१. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः ह्सौः 'क्षं' दोष-त्रय-रूपायै विद्यात्मिकायै नमः।

३. 'मेरु-दण्ड'-स्थित सूक्ष्म छः चक्रों में वर्ण-बीजाक्षर-मातृका का न्यास

उक्त 'वर्ण-बीजाक्षर-मातृका'-मय 'प्रपञ्च-न्यास' करने के बाद पहले प्राणायाम करना चाहिए और उसके बाद अपने शरीर में सूक्ष्म छः चक्रों में न्यास करना चाहिए। यथा–

१. गले में, १६ दलोंवाले 'विशुद्ध चक्र' में–ॐ अं नमः। ॐ आं नमः। ॐ इं नमः। ॐ ईं नमः। ॐ उं नमः। ॐ ऊं नमः। ॐ ऋं नमः। ॐ ॠं नमः। ॐ ऌं नमः। ॐ ॡं नमः। ॐ एं नमः। ॐ ऐं नमः। ॐ ओं नमः। ॐ औं नमः। ॐ अं नमः। ॐ अः नमः।

२. हृदय में, १२ दलोंवाले 'अनाहत-चक्र' में– ॐ कं नमः। ॐ खं नमः। ॐ गं नमः। ॐ घं नमः। ॐ ङं नमः। ॐ चं नमः। ॐ छं नमः। ॐ जं नमः। ॐ झं नमः। ॐ ञं नमः। ॐ टं नमः। ॐ ठं नमः।

३. नाभि में, १० दलोंवाले 'मणिपुर-चक्र' में– ॐ डं नमः। ॐ ढं नमः। ॐ णं नमः। ॐ तं नमः। ॐ थं नमः। ॐ दं नमः। ॐ धं नमः। ॐ नं नमः। ॐ पं नमः। ॐ फं नमः।

४. लिङ्ग–मूल में, ६ दलोंवाले 'स्वाधिष्ठान–चक्र' में–ॐ बं नमः। ॐ भं नमः। ॐ मं नमः। ॐ यं नमः। ॐ रं नमः। ॐ लं नमः।
५. गुदा में, ४ दलोंवाले 'मूलाधार–चक्र' में– ॐ वं नमः। ॐ शं नमः। ॐ षं नमः। ॐ सं नमः।
६. भ्रू–मध्य में, २ दलोंवाले 'आज्ञा–चक्र' में– ॐ हं नमः। ॐ क्षं नमः।

४. स्थूल शरीर के विभिन्न अङ्गों में 'वर्ण-बीजाक्षर-मातृकाओं' का न्यास

अपने शरीर में सूक्ष्म षट्–चक्रों में न्यास करने के बाद अपने स्थूल शरीर के विभिन्न अङ्गों में 'वर्ण–बीजाक्षर–मातृकाओं' का न्यास करना चाहिए। यथा–

'क्षं' नमः ललाटे।
'ळं' नमः मुख–वृत्ते।
'हं' नमः दक्ष–नेत्रे।
'सं' नमः वाम–नेत्रे।
'षं' नमः दक्ष–कर्णे।
'शं' नमः वाम–कर्णे।
'वं' नमः दक्ष नासायाम्।
'लं' नमः वाम नासायाम्।
'रं' नमः दक्ष गण्डे।
'यं' नमः वाम गण्डे।
'मं' नमः ऊर्ध्व ओष्ठे।
'भं' नमः अधो ओष्ठे।
'बं' नमः ऊर्ध्व दन्त–पंक्तौ।
'फं' नमः अधो दन्त–पंक्तौ।
'पं' नमः शिरसि।
'नं' नमः मुखे।
'धं' नमः दक्ष बाहु–मूले।
'दं' नमः दक्ष कूर्परे।
'थं' नमः दक्ष मणि–बन्धे।
'तं' नमः दक्ष कर–तले।
'णं' नमः दक्ष कराग्रे।
'ढं' नमः वाम बाहु–मूले।
'डं' नमः वाम कूर्परे।
'ठं' नमः वाम मणि–बन्धे।
'टं' नमः वाम कर–तले।
'ञं' नमः वाम कराग्रे।
'झं' नमः दक्षोरु मूले
'जं' नमः दक्ष जानुनि।
'छं' नमः दक्ष गुल्फे।
'चं' नमः दक्ष पाद–तले।
'ङं' नमः दक्ष पादाग्रे।
'घं' नमः वामोरु मूले
'गं' नमः वाम जानुनि।
'खं' नमः वाम गुल्फे।
'कं' नमः वाम पाद–तले।
'अः' नमः वाम पादाग्रे।
'अं' नमः दक्षे पार्श्वे।
'औं' नमः वाम पार्श्वे।
'ओं' नमः पृष्ठे।
'ऐं' नमः नाभौ।
'एं' नमः जठरे।
'ॡं' नमः हृदये।
'ऌं' नमः दक्षांशे।
'ॠं' नमः ककुदि।
'ऋं' नमः वामांशे।
'ऊं' नमः हृदयादि दक्ष करान्तम्।
'उं' नमः हृदयादि वाम करान्तम्।
'ईं' नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम्।
'इं' नमः हृदयादि वाम पादान्तम्।
'आं' नमः हृदयादि कुक्षौ।
'अं' नमः हृदयादि मुखे।

५. ५१ 'वर्ण-बीजाक्षर-मातृकाओं' का ध्यान एवं मन्त्र-जप

'वर्ण–बीजाक्षर–मातृका'–मय श्री श्रीगुरु–चक्र का ध्यान–पूजन, प्रपञ्च–न्यास एवं अपने शरीर के सूक्ष्म तथा स्थूल अङ्गों में न्यास करने के बाद ५१ 'वर्ण–बीजाक्षर–मातृकाओं' का ध्यान एवं मन्त्र–जप आगे प्रकाशित विधि के अनुसार करना चाहिए। ऐसा करने से शीघ्र मन्त्र–सिद्धि एवं दिव्य अनुभूतियों की प्राप्ति होती है।

१. वर्ण-बीजाक्षर-'अ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'केशव'
विष्णु-शक्ति-'कीर्ति'

रुद्र-रूप-'श्रीकण्ठ'
रुद्र-शक्ति-'पूर्णोदरी'

अं

गणेश-रूप-'विघ्नेश'
गणेश-शक्ति-'ह्री'

काम-रूप-'काम'
काम-शक्ति-'रति'

क्षेत्रपाल-रूप-'अजर'

'अ'-कार वर्ण का ध्यान

केतकी-पुष्प-गर्भाभां*, द्वि-भुजां हंस-लोचनाम्।
शुक्ल-पट्टाम्बर-धरां, पद्म-माल्य-विभूषिताम्।।
चतुर्वर्ग-प्रदां** नित्यं, नित्यानन्द-मयीं पराम्।
वराभय-करां देवीं, नाग-पाश-समन्विताम्।।

'अ'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ अकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'अ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'अ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ अकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'अ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ अकाराय नमः
अभीष्ट-मन्त्र
नमो अकाराय ॐ

* 'केतकी-पुष्प-गर्भाभां' = श्वेत केतकी-पुष्प के भीतरी भाग जैसी विलक्षण चमकीली आभावाली।

** 'चतुर्वर्ग-प्रदाम्' = १. धर्म, २. अर्थ, ३. काम और ४. मोक्ष को प्रदान करनेवाली।

२. वर्ण-बीजाक्षर-'आ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'नारायण'
विष्णु-शक्ति-'कान्ति'

रुद्र-रूप-'अनन्त'
रुद्र-शक्ति-'विरजा'

आं

गणेश-रूप-'विघ्न-राज'
गणेश-शक्ति-'श्री'

काम-रूप-'कामद'
काम-शक्ति-'प्रीति'

क्षेत्रपाल-रूप-'आप-कुम्भ'

'आ'-कार वर्ण का ध्यान

ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि, षड्-भुजां रक्त-लोचनाम् ।
रत्न - कङ्कण - केयूर - हारोज्ज्वल - कलेवराम्।
सिद्धां सिद्धि-प्रदां सौम्यां, सिद्ध-गन्धर्व-सेविताम्*।।

'आ'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ आकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'आ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'आ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ आकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'आ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा–

ॐ आकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो आकाराय ॐ

* 'सिद्ध-गन्धर्व-सेविताम्' = सिद्ध योगियों, स्वर्गीय गायकों द्वारा जपा जानेवाला।

३. वर्ण-बीजाक्षर-'इ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'माधव'
विष्णु-शक्ति-'तुष्टि'

रुद्र-रूप-'सूक्ष्म'
रुद्र-शक्ति-'शाल्मली'

ई

गणेश-रूप-'विनायक'
गणेश-शक्ति-'पुष्टि'

काम-रूप-'कान्त'
काम-शक्ति-'कामिनी'

क्षेत्रपाल-रूप-'इन्द्र-स्तुति'

■ 'इ'-कार वर्ण का ध्यान ■

धूम्र-वर्णां महा-रौद्रीं, पीताम्बर-युतां पराम् ।
कामदां सिद्धिदां सौम्यां, नित्योत्साह-विवर्द्धिनीम्*।।

■ 'इ'-कार वर्ण का मन्त्र ■

'ॐ इकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'इ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'इ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ इकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'इ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ इकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो इकाराय ॐ

* 'नित्योत्साह-विवर्द्धिनीम्' = नित्य उत्साह को बढ़ानेवाली।

४. वर्ण-बीजाक्षर–'ई'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप–'गोविन्द'
विष्णु-शक्ति–'पुष्टि'

रुद्र-रूप–'त्रि-मूर्ति'
रुद्र-शक्ति–'लोलाक्षी'

ई

गणेश-रूप–'शिवोत्तम'
गणेश-शक्ति–'शान्ति'

काम-रूप–'कान्ति-मान्'
काम-शक्ति–'मोहिनी'

क्षेत्रपाल-रूप–'इडाचार'

'ई'-कार वर्ण का ध्यान

चतुर्भुजां रक्त-वर्णां, रक्त-पुष्पोप-शोभिताम् ।
चारु-चन्दन-दिग्धाङ्गीं*, रक्त-पङ्कज-लोचनाम्।
रक्त - चीर - परीधानां, धर्म - कामार्थ - मोक्षदाम्।।

'ई'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ ईकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ई'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ई'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ ईकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ई'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा–

ॐ ईकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो ईकाराय ॐ

* 'चारु-चन्दन-दिग्धाङ्गीं' = चन्दन से लिप्त सुन्दर अङ्गोंवाली।

५. वर्ण-बीजाक्षर-'उ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'विष्णु'
विष्णु-शक्ति-'धृति'

रुद्र-रूप-'अमरेश्वर'
रुद्र-शक्ति-'वर्तुलाक्षी'

उं

गणेश-रूप-'विघ्न-कृत्'
गणेश-शक्ति-'क्षान्ति'

काम-रूप-'कामग'
काम-शक्ति-'कमल-प्रिया'

क्षेत्रपाल-रूप-'उक्त-संज्ञ'

'उ'-कार वर्ण का ध्यान

पीत-वर्णां त्रि-नयनां, पीताम्बर-धरां पराम्।
द्वि-भुजां जटिलां* भीमां**, सर्व-सिद्धि-प्रदायिनीम् ।।

'उ'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ उकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'उ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'उ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ उकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'उ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ उकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो उकाराय ॐ

* 'जटिलां' = जटाधारी, सघन बालोंवाली।

** 'भीमां' = भयङ्कर।

६. वर्ण-बीजाक्षर-'ऊ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'मधु-सूदन'
विष्णु-शक्ति-'शान्ति'

रुद्र-रूप-'अर्घीश'
रुद्र-शक्ति-'दीर्घ-घोणा'

ऊं

गणेश-रूप-'विघ्न-हर्ता'
गणेश-शक्ति-'सरस्वती'

काम-रूप-'काम-चार'
काम-शक्ति-'विलासिनी'

क्षेत्रपाल-रूप-'ऊष्माद'

'ऊ'-कार वर्ण का ध्यान

द्वि-भुजां शुक्ल-वर्णां च, जटा-मुकुट-शोभिताम्।
शुक्ल-माल्याम्बर-धरां, चारु-चन्दन-भूषिताम्।
चतुर्वर्ग-प्रदां* नित्यां, रक्त-पङ्कज-लोचनाम्।।

'ऊ'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ ऊकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ऊ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ऊ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ ऊकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ऊ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ ऊकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो ऊकाराय ॐ

* 'चतुर्वर्ग-प्रदां' = १. धर्म, २. अर्थ, ३. काम और ४. मोक्ष को प्रदान करनेवाली।

७. वर्ण-बीजाक्षर-'ॠ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'त्रि-विक्रम'
विष्णु-शक्ति-'क्रिया'

रुद्र-रूप-'भाव-भूति'
रुद्र-शक्ति-'सुदीर्घ-मुखी'

ॠं

गणेश-रूप-'गण-नायक'
गणेश-शक्ति-'स्वाहा'

काम-रूप-'कामी'
काम-शक्ति-'कल्प-लता'

क्षेत्रपाल-रूप-'ॠषि-सूदन'

■ 'ॠ'-कार वर्ण का ध्यान ■

षड्-भुजां नील-वर्णां च, नीलाम्बर-धरां पराम्।
नानालङ्कार - भूषाढ्यां, सर्वालंकृत - मस्तकाम्।।
भक्ति-प्रदां भगवतीं, भोग-मोक्ष-प्रदायिनीम्।
पञ्च - प्राण - मयं वर्णं, चतुर्ज्ञान - मयं सदा*।
रक्त - विद्युल्लताकारं, ॠ-कारं प्रणमाम्यहम्।।

■ 'ॠ'-कार वर्ण का मन्त्र ■

'ॐ ॠकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ॠ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ॠ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ ॠकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ॠ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ ॠकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो ॠकाराय ॐ

* 'चतुर्ज्ञान-मयं सदा' = चारों वेदों के ज्ञान से सदा युक्त।

८. वर्ण-बीजाक्षर-'ॠ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'वामन'
विष्णु-शक्ति-'दया'

रुद्र-रूप-'अतिथि'
रुद्र-शक्ति-'गो-मुखी'

ॠं

गणेश-रूप-'एक-दन्त'
गणेश-शक्ति-'मेधा'

काम-रूप-'कामुक'
काम-शक्ति-'श्यामला'

क्षेत्रपाल-रूप-'समुक्त'

'ॠ'-कार वर्ण का ध्यान

ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि, द्वि-भुजां पद्म-लोचनाम्।
सन्तप्त-स्वर्ण-वर्णाभां, सर्वालङ्कार-भूषिताम्।।
रक्त - पद्मेक्षणां देवीं, रत्न - हार - विभूषिताम्।
चतुर्ज्ञान - मयं वर्णं, पञ्च - प्राण - मयं सदा।
त्रि-शक्ति-सहितं वर्णं*, प्रणमामि सदा प्रिये! ।।

'ॠ'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ ॠकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ॠ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ॠ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ ॠकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ऊ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा–

ॐ ॠकाराय नमः
अभीष्ट-मन्त्र
नमो ॠकाराय ॐ

* 'त्रि-शक्ति-सहितं वर्णं' = १. इच्छा, २. क्रिया एवं ३. ज्ञान से युक्त वर्ण-मातृका।

९. वर्ण-बीजाक्षर-'ॡ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'श्रीधर'
विष्णु-शक्ति-'मेधा'

रुद्र-रूप-'स्थाणुक'
रुद्र-शक्ति-'दीर्घ-जिह्वा'

ॡं

गणेश-रूप-'द्वि-दन्त'
गणेश-शक्ति-'कान्ति'

काम-रूप-'काम-वर्द्धन'
काम-शक्ति-'शुचि-स्मिता'

क्षेत्रपाल-रूप-'लुप्त-केश'

■ 'ॡ'-कार वर्ण का ध्यान ■

स्वर्ण-चम्पक-वर्णां च, स्वर्णालङ्कार-विग्रहाम्।
चतुर्भुजां त्रि-नयनां, रक्त-चन्दन-चर्चिताम्*।
प्रणमामि सदा देवीं, धर्म-कामार्थ-मोक्षदाम्।।

■ 'ॡ'-कार वर्ण का मन्त्र ■

'ॐ ॡकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ॡ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ॡ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ ॡकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ॡ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा–

ॐ ॡकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो ॡकाराय ॐ

* 'रक्त-चन्दन-चर्चिताम्' = रक्त-चन्दन से सुवासित।

१०. वर्ण-बीजाक्षर-'ॡ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'हृषीकेश'
विष्णु-शक्ति-'हर्षी'

रुद्र-रूप-'हर'
रुद्र-शक्ति-'कुण्डोदरी'

ॡं

गणेश-रूप-'गज-वक्त्र'
गणेश-शक्ति-'कामिनी'

काम-रूप-'वाम'
काम-शक्ति-'विस्मिता'

क्षेत्रपाल-रूप-'क्षेपक'

'ॡ'-कार वर्ण का ध्यान

ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि, पीत-वर्णां* चतुर्भुजाम्।
पीताम्बर-परीधानां, नानालङ्कार-मस्तकाम्।।
विचित्र-माल्याभरणां, देव-दानव-सेविताम्।
चतुर्वर्ग-प्रदां नित्यां, नित्योत्साह-विवर्द्धिनीम्।।

'ॡ'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ ॡकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ॡ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ॡ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ ॡकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ॡ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा–

ॐ ॡकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो ॡकाराय ॐ

* 'पीत-वर्णां' = पीले वर्ण से सूचित होनेवाले भाव अर्थात् ऐश्वर्य, सम्पत्ति, श्री, रजो-गुणादि, स्तम्भन से युक्त।

११. वर्ण-बीजाक्षर-'ए'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'पद्मनाभ'
विष्णु-शक्ति-'श्रद्धा'

रुद्र-रूप-'झिण्टीश'
रुद्र-शक्ति-'ऊर्ध्व-केशी'

एं

गणेश-रूप-'निरञ्जन'
गणेश-शक्ति-'मोहिनी'

काम-रूप-'राम'
काम-शक्ति-'विशालाक्षी'

क्षेत्रपाल-रूप-'एक-दंष्ट्रक'

■ 'ए'-कार वर्ण का ध्यान ■

रक्ताम्बर-परीधानां, षड्-भुजां रक्त-लोचनाम्।
विचित्राभरणां नित्यां*, चतुर्वर्ग-प्रदायिनीम्।।

■ 'ए'-कार वर्ण का मन्त्र ■

'ॐ एकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ए-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ए'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ एकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ए'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ एकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो एकाराय ॐ

* 'विचित्राभरणां नित्यां = सदा बहुरंगी मनोहर आभूषणों से सज्जिता।

१२. वर्ण-बीजाक्षर-'ऐ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'दामोदर'
विष्णु-शक्ति-'लज्जा'

रुद्र-रूप-'भौतिक'
रुद्र-शक्ति-'विकृत-मुखी'

ऐं

गणेश-रूप-'कपर्दी'
गणेश-शक्ति-'नटी'

काम-रूप-'रमण'
काम-शक्ति-'लेलिहाना'

क्षेत्रपाल-रूप-'ऐरावत'

■ 'ऐ'-कार वर्ण का ध्यान ■

विचित्र-रूपिणीं देवीं, विचित्राम्बर-धारिणीम्*।
विचित्र - माल्याभरणां, चतुर्बाहु - समन्विताम्।।
नानालङ्कार - संयुक्तां, चतुर्वर्ग - फल - प्रदाम्।
देव-दानव-गन्धर्वैः, सेवितां मोक्ष-कांक्षिभिः।।

■ 'ऐ'-कार वर्ण का मन्त्र ■

'ॐ ऐकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ऐ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ऐ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ ऐकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ऐ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ ऐकाराय नमः
अभीष्ट-मन्त्र
नमो ऐकाराय ॐ

* 'विचित्राम्बर-धारिणीम्' = बहुरंगी मनोहर वस्त्रों को धारण करनेवाली।

१३. वर्ण-बीजाक्षर-'ओ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'वासुदेव'
विष्णु-शक्ति-'लक्ष्मी'

रुद्र-रूप-'सद्योजात'
रुद्र-शक्ति-'ज्वालामुखी'

ओं

गणेश-रूप-'दीर्घ-वक्त्र'
गणेश-शक्ति-'पार्वती'

काम-रूप-'रति-नाथ'
काम-शक्ति-'दिगम्बरा'

क्षेत्रपाल-रूप-'ओघ-बन्धु'

■ 'ओ'-कार वर्ण का ध्यान ■

रत्नालङ्कार-संयुक्तां, पद्म-राग-प्रभां शुभाम्।
शरत् - पूर्णेन्दु - वदनां, विचित्र - वसनान्विताम्।।
चतुर्भुजां त्रि-नयनां, स्मेरास्यां नील-कुन्तलाम्।
विद्युद्-दाम-समानाङ्गीं*, मुक्ता-पंक्ति-स्त्रजं भजे।।

■ 'ओ'-कार वर्ण का मन्त्र ■

'ॐ ओकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ओ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ओ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ ओकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ओ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ ओकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो ओकाराय ॐ

* 'विद्युद्-दाम-समानाङ्गीं' = विद्युत के समान चमकीले अङ्गोंवाली।

१४. वर्ण-बीजाक्षर-'औ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'संकर्षण'
विष्णु-शक्ति-'सरस्वती'

रुद्र-रूप-'अनुग्रहेश्वर'
रुद्र-शक्ति-'उल्का-मुखी'

औं

गणेश-रूप-'शंकु-कर्ण'
गणेश-शक्ति-'ज्वालिनी'

काम-रूप-'रति-प्रिय'
काम-शक्ति-'वामा'

क्षेत्रपाल-रूप-'रोगाधीश'

'औ'-कार वर्ण का ध्यान

चतुर्भुजां त्रि-नयनां, जटा-मुकुट-मण्डिताम्।
श्वेत - रोहित* - पीतादि - पुष्प - हारोपशोभिताम्।
सदा स्मेर-मुखीं** सौम्यां, चतुर्वर्ग प्रदायिनीम्।।

'औ'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ औकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'औ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'औ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ औकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'औ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ औकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो औकाराय ॐ

* 'रोहित' = लाल।
** 'सदा स्मेर-मुखीं' = सदा मुस्कारानेवाली।

१५. वर्ण-बीजाक्षर-'अं'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'प्रद्युम्न'
विष्णु-शक्ति-'प्रीति'

रुद्र-रूप-'अक्रूर'
रुद्र-शक्ति-'श्री-मुखी'

अं

गणेश-रूप-'वृषभ-ध्वज'
गणेश-शक्ति-'नन्दा'

काम-रूप-'रात्रि-नाथ'
काम-शक्ति-'कुब्जिका'

क्षेत्रपाल-रूप-'अञ्जन'

'अं'-कार वर्ण का ध्यान

जवा-दाडिम-पुष्पाभां*, द्वि-भुजां रक्त-लोचनाम्।
रक्ताम्बर - परीधानां, रक्तालङ्कार - भूषिताम्।
चतुर्वर्ग - प्रदां सौम्यां, वरदां नाग - शेखराम्।।

'अं'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ अंकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'अं'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'अं'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ अंकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'अं'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा–

ॐ अंकाराय नमः
अभीष्ट-मन्त्र
नमो अंकाराय ॐ

* 'जवा-दाडिम-पुष्पाभां' = गुडहल एवं अनार के पुष्पों के समान आभावाली।

१६. वर्ण-बीजाक्षर-'अः'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'अनिरुद्ध'
विष्णु-शक्ति-'रति'

रुद्र-रूप-'महासेन'
रुद्र-शक्ति-'विद्या-मुखी'

अः

गणेश-रूप-'गण-नायक'
गणेश-शक्ति-'सुयशा'

काम-रूप-'रमा-कान्त'
काम-शक्ति-'नित्या'

क्षेत्रपाल-रूप-'अस्त्र-बाहु'

'अः'-कार वर्ण का ध्यान

सन्तप्त-हेम-वर्णाभां, सर्वालङ्कार-भूषिताम्।
रत्न-यज्ञोपवीतां च, रत्न-कङ्कण-राजिताम्।।
पूर्णेन्दु-वदनां सौम्यां, तुरीय-कर-संयुताम्*।
चन्द्र-सूर्याग्नि-रूपेण, नयन-त्रितयान्विताम्।
साधकाभीष्टदां नित्यां, धर्म-कामार्थ-मोक्षदाम्।।

'अः'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ अःकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'अः'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'अः'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ अःकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'अः'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ अःकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो अःकाराय ॐ

* 'तुरीय-कर-संयुताम्' = चार हाथोंवाली।

१७. वर्ण-बीजाक्षर-'क'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'चक्री'
विष्णु-शक्ति-'जया'

रुद्र-रूप-'क्रोधीश'
रुद्र-शक्ति-'महा-काली'

कं

गणेश-रूप-'गजेन्द्र'
गणेश-शक्ति-'काम-रूपिणी'

काम-रूप-'रममाण'
काम-शक्ति-'कल्याणी'

क्षेत्रपाल-रूप-'कंवल'

'क'-कार वर्ण का ध्यान

जवा-यावक*-सिन्दूर-सदृशीं कामिनीं पराम्।
चतुर्भुजां त्रि-नेत्रां च, बाहु-वल्ली-विराजताम्**।।
कदम्ब - कोरकाकार - स्तन - युग्म - विराजिताम्।
रत्न - कङ्कण - केयूर - हार - नूपुर - भूषिताम्।।

'क'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ ककाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'क'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'क'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ ककाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'क'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ ककाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो ककाराय ॐ

* 'यावक' = लाल महावर।

** 'बाहु-वल्ली-विराजिताम्' = सुन्दर गठीली भुजाओं से देदीप्यमान।

१८. वर्ण-बीजाक्षर-'ख'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'गदी'
विष्णु-शक्ति-'दुर्गा'

रुद्र-रूप-'चण्डेश'
रुद्र-शक्ति-'सरस्वती'

खं

गणेश-रूप-'शूर्प-कर्ण'
गणेश-शक्ति-'उग्रा'

काम-रूप-'निशाचर'
काम-शक्ति-'कुल्या'

क्षेत्रपाल-रूप-'खरखानल'

'ख'-कार वर्ण का ध्यान

बन्धूक-पुष्प-सङ्काशां, रत्नालङ्कार-भूषिताम्।
वराभय-करां नित्यामीषद्-हास्य-मुखीं* पराम्।।

'ख'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ खकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ख'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ख'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ खकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ख'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ खकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो खकाराय ॐ

* 'नित्यामीषद्-हास्य-मुखीं' = सदैव मुस्कराते हुए मुखवाली।

१९. वर्ण-बीजाक्षर–'ग'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप–'शार्ङ्गी'
विष्णु-शक्ति–'प्रभा'

रुद्र-रूप–'पञ्चान्तक'
रुद्र-शक्ति–'गौरी'

गं

गणेश-रूप–'त्रि-लोचन'
गणेश-शक्ति–'तेजोवती'

काम-रूप–'नन्दक'
काम-शक्ति–'मदना'

क्षेत्रपाल-रूप–'गो-मुख'

'ग'-कार वर्ण का ध्यान

दाडिमी-पुष्प-सङ्काशां, चतुर्बाहु-समन्विताम्।
रक्ताम्बर-धरां नित्यां, रक्तालङ्कार-भूषिताम्।।

'ग'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ गकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ग'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ग'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ गकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ग'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा–

ॐ गकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो गकाराय ॐ

२०. वर्ण-बीजाक्षर-'घ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'खड्गी'
विष्णु-शक्ति-'सत्या'

रुद्र-रूप-'शिवोत्तम'
रुद्र-शक्ति-'त्रैलोक्य-विद्या'

घं

गणेश-रूप-'लम्बोदर'
गणेश-शक्ति-'सत्या'

काम-रूप-'नन्दन'
काम-शक्ति-'कामदा'

क्षेत्रपाल-रूप-'घण्टादो'

'घ'-कार वर्ण का ध्यान

मालती-पुष्प-वर्णाभां, षड्-भुजां रक्त-लोचनाम्।
शुक्लाम्बर-परीधानां, शुक्ल-माल्य-विभूषिताम्।।
सदा स्मेर-मुखीं रम्यां, लोचन-त्रय-राजिताम्।
निर्गुणं त्रि-गुणोपेतं, सदा त्रिगुण-संयुताम्।
सर्वगं* सर्वदं शान्तं, घ-कारं प्रणमाम्यहम्।।

'घ'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ घकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'घ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'घ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ घकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'घ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ घकाराय नमः
अभीष्ट-मन्त्र
नमो घकाराय ॐ

* 'सर्वगं' = विश्व-व्यापी।

२१. वर्ण-बीजाक्षर-'ङ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'शङ्खी'
विष्णु-शक्ति-'चण्डा'

रुद्र-रूप-'एक-रुद्र'
रुद्र-शक्ति-'मन्त्र-शक्ति'

ङं

गणेश-रूप-'महानन्द'
गणेश-शक्ति-'विघ्नेशी'

काम-रूप-'नन्दी'
काम-शक्ति-'सु-लोचना'

क्षेत्रपाल-रूप-'ङमन'

'ङ'-कार वर्ण का ध्यान

धूम्र-वर्णां महा-घोरां, ललज्जिह्वां* चतुर्भुजाम्।
पीताम्बर-परीधानां, साधकाभीष्ट-सिद्धिदाम्।।

'ङ'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ ङकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ङ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ङ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ ङकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ङ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा—

ॐ ङकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो ङकाराय ॐ

* 'ललज्जिह्वां' = लपलपाती हुई जिह्वावाली भीषण।

२२. वर्ण-बीजाक्षर-'च'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'हली'
विष्णु-शक्ति-'वाणी'

रुद्र-रूप-'कूर्म'
रुद्र-शक्ति-'आत्म-शक्ति'

चं

गणेश-रूप-'चतुर्मूर्ति'
गणेश-शक्ति-'सु-रूपिणी'

काम-रूप-'नन्दयिता'
काम-शक्ति-'सुलापिनी'

क्षेत्रपाल-रूप-'चण्ड-वारण'

'च'-कार वर्ण का ध्यान

तुषार-कुन्द-पुष्पाभां*, नानालङ्कार-भूषिताम्।
सदा षोडश - वर्षीयां, वराभय - करां पराम्।।
शुक्ल-वस्त्रावृत-कटिं, शुक्ल-वस्त्रोत्तरीयिणीम्।
वरदां शोभनां रम्यामष्ट - बाहु - समन्विताम्।।

'च'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ चकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'च'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'च'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ चकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'च'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा–

ॐ चकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो चकाराय ॐ

* 'तुषार-कुन्द-पुष्पाभां' = कर्पूर जैसे श्वेत एवं शीतल पुष्प जैसी आभावाली।

२३. वर्ण-बीजाक्षर–'छ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप–'मुषली'
विष्णु-शक्ति–'विलासिनी'

रुद्र-रूप–'एक-नेत्र'
रुद्र-शक्ति–'भूत-माता'

छं

गणेश-रूप–'सदा-शिव'
गणेश-शक्ति–'कामदा'

काम-रूप–'पञ्च-वाण'
काम-शक्ति–'मर्दिनी'

क्षेत्रपाल-रूप–'छटाटाप'

■ 'छ'-कार वर्ण का ध्यान ■

ध्यानमस्याः प्रवक्ष्यामि, द्वि-भुजां तु त्रि-लोचनाम्।
पीताम्बर-धरां नित्यां, वरदां भक्त-वत्सलाम्*।।

■ 'छ'-कार वर्ण का मन्त्र ■

'ॐ छकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'छ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'छ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ छकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'छ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा–

ॐ छकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो छकाराय ॐ

* 'भक्त-वत्सलाम्' = भक्तों के लिए स्नेह-मयी।

२४. वर्ण-बीजाक्षर-'ज'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'शूली'
विष्णु-शक्ति-'विजया'

रुद्र-रूप-'चतुरानन'
रुद्र-शक्ति-'लम्बोदरी'

जं

गणेश-रूप-'आमोद'
गणेश-शक्ति-'मद-जिह्वा'

काम-रूप-'रति-सख'
काम-शक्ति-'कलह-प्रिया'

क्षेत्रपाल-रूप-'जटाल'

'ज'-कार वर्ण का ध्यान

नानालङ्कार - संयुक्तैर्भुजैर्द्वादशभिर्वृताम्।
रक्त-चन्दन-दिग्धाङ्गीं, चित्राम्बर-विधारिणीम्*।
त्रि-लोचनां जगद्धात्रीं, वरदां भक्त-वत्सलाम्।।

'ज'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ जकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ज'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ज'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ जकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ज'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ जकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो जकाराय ॐ

* 'चित्राम्बर-विधारिणीम्' = रङ्ग-बिरङ्गे परिधान धारण करनेवाली।

२५. वर्ण-बीजाक्षर-'झ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'पाशी'
विष्णु-शक्ति-'विरजा'

रुद्र-रूप-'अजेश'
रुद्र-शक्ति-'द्राविणी'

झं

गणेश-रूप-'दुर्मुख'
गणेश-शक्ति-'भूति'

काम-रूप-'पुष्प-धन्वा'
काम-शक्ति-'एकाक्षी'

क्षेत्रपाल-रूप-'ऋद्धीव'

'झ'-कार वर्ण का ध्यान

सन्तप्त-हेम-वर्णाभां*, रक्ताम्बर-विभूषिताम्।
रक्त-चन्दन-लिप्ताङ्गीं, रक्त-माल्य-विभूषिताम्।
चतुर्दश-भुजां देवीं, रत्न-हारोज्ज्वलां पराम्।।

'झ'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ झकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'झ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'झ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ झकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'झ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा–

ॐ झकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो झकाराय ॐ

* 'सन्तप्त-हेम-वर्णाभां' = गर्म, चमकते हुए स्वर्ण जैसी आभावाली।

२६. वर्ण-बीजाक्षर-'अ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'अंकुशी'
विष्णु-शक्ति-'विश्वा'

रुद्र-रूप-'सर्व'
रुद्र-शक्ति-'नागरी'

अं

गणेश-रूप-'सुमुख'
गणेश-शक्ति-'भौतिका'

काम-रूप-'महा-धनु'
काम-शक्ति-'सुमुखी'

क्षेत्रपाल-रूप-'जड़श्वर'

'अ'-कार वर्ण का ध्यान

चतुर्भुजां धूम्र-वर्णां, कृष्णाम्बर-विभूषिताम्।
नानालङ्कार - संयुक्तां, जटा - मुकुट - राजिताम्।
ईषद्-हास्य-मुखीं* नित्यां, वरदां भक्त-वत्सलाम्।।

'अ'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ अकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'अ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'अ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ अकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'अ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ अकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो अकाराय ॐ

* 'ईषद्-हास्य-मुखीं' = मन्द-मन्द मुस्कराहटवाली।

२७. वर्ण-बीजाक्षर-'ट'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'मुकुन्द'
विष्णु-शक्ति-'वित्तदा'

रुद्र-रूप-'सोमेश'
रुद्र-शक्ति-'खेचरी'

टं

गणेश-रूप-'प्रमोद'
गणेश-शक्ति-'सिता'

काम-रूप-'भ्रामण'
काम-शक्ति-'नलिनी'

क्षेत्रपाल-रूप-'टङ्क-पाणि'

'ट'-कार वर्ण का ध्यान

मालती-कुन्द-पुष्पाभां, पूर्ण-चन्द्र-निभेक्षणाम्*।
दश - बाहु - समायुक्तां, सर्वालङ्कार - भूषिताम्।
पर-मोक्ष-प्रदां नित्यां, सदा स्मेर-मुखीं पराम्।।

'ट'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ टकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ट'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ट'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ टकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ट'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा–

ॐ टकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो टकाराय ॐ

* 'पूर्ण-चन्द्र-निभेक्षणाम्' = पूरे चन्द्रमा के समान दृश्यमान।

२८. वर्ण-बीजाक्षर-'ठ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'नन्दज'
विष्णु-शक्ति-'सुतदा'

रुद्र-रूप-'लाङ्गलि'
रुद्र-शक्ति-'मञ्जरी'

ठं

गणेश-रूप-'एक-पद'
गणेश-शक्ति-'रमा'

काम-रूप-'भ्रमण'
काम-शक्ति-'जयिनी'

क्षेत्रपाल-रूप-'ठाण-बन्धु'

'ठ'-कार वर्ण का ध्यान

पूर्ण-चन्द्र-निभां देवीं, विकसत्-पङ्कजेक्षणाम्*।
सुन्दरीं षोडश-भुजां, धर्म-कामार्थ-मोक्षदाम्।।

'ठ'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ ठकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ठ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ठ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ ठकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ठ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ ठकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो ठकाराय ॐ

* 'विकसत्-पङ्कजेक्षणाम्' = खिले हुए कमल के समान दृश्यमान।

२९. वर्ण-बीजाक्षर-'ड'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'नन्दी'
विष्णु-शक्ति-'स्मृति'

रुद्र-रूप-'दारुक'
रुद्र-शक्ति-'रूपिणी'

डं

गणेश-रूप-'द्वि-जिह्व'
गणेश-शक्ति-'महिषी'

काम-रूप-'भ्रममाण'
काम-शक्ति-'पालिनी'

क्षेत्रपाल-रूप-'डामर'

'ड'-कार वर्ण का ध्यान

जवा-सिन्दूर-सङ्काशां*, वराभय-करां पराम्।
त्रि - नेत्रां वरदां नित्यां, पर - मोक्ष - प्रदायिनीम्।।

'ड'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ डकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ड'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ड'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ डकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ड'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा—

ॐ डकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो डकाराय ॐ

* 'जवा-सिन्दूर-सङ्काशां' = सिन्दूर जैसे लाल गुडहल के फूल के समान आभावाली।

३०. वर्ण-बीजाक्षर-'ढ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'नर'
विष्णु-शक्ति-'ऋद्धि'

रुद्र-रूप-'अर्द्ध-नारीश्वर'
रुद्र-शक्ति-'चित्रिणी'

ढं

गणेश-रूप-'शूर'
गणेश-शक्ति-'भञ्जिनी'

काम-रूप-'भ्रमा'
काम-शक्ति-'शिवा'

क्षेत्रपाल-रूप-'ढक्कावार'

'ढ'-कार वर्ण का ध्यान

रक्तोत्पल-निभां रम्यां, रक्त-पङ्कज-लोचनाम्।
अष्टादश-भुजां भीमां, महा-मोक्ष-प्रदायिनीम्*।।

'ढ'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ ढकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ढ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ढ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ ढकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ढ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ ढकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो ढकाराय ॐ

* 'महा-मोक्ष-प्रदायिनीम्' = अन्तिम रूप से मोक्ष प्रदान करनेवाली।

३१. वर्ण-बीजाक्षर-'ण'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'नरक-जित्'
विष्णु-शक्ति-'समृद्धि'

रुद्र-रूप-'उमा-कान्त'
रुद्र-शक्ति-'काकोदरी'

णं

गणेश-रूप-'वीर'
गणेश-शक्ति-'विकर्णपा'

काम-रूप-'भ्रान्त'
काम-शक्ति-'मुग्धा'

क्षेत्रपाल-रूप-'ण-वाण'

'ण'-कार वर्ण का ध्यान

द्वि-भुजां वरदां वन्द्यां, भक्ताभीष्ट-प्रदायिनीम्*।
राजीव-लोचनां नित्यां, धर्म-कामार्थ-मोक्षदाम्।।

'ण'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ णकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ण'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ण'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ णकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ण'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ णकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो णकाराय ॐ

* 'भक्ताभीष्ट-प्रदायिनीम्' = भक्तों की इच्छाओं को पूरा करनेवाली।

३२. वर्ण-बीजाक्षर-'त'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'हरि'
विष्णु-शक्ति-'शुद्धि'

रुद्र-रूप-'आषाढ़ी'
रुद्र-शक्ति-'पूतना'

तं

गणेश-रूप-'षण्मुख'
गणेश-शक्ति-'भ्रकुटि'

काम-रूप-'भ्रामक'
काम-शक्ति-'स-विभ्रमा'

क्षेत्रपाल-रूप-'तड़िद्-देह'

'त'-कार वर्ण का ध्यान

चतुर्भुजां महा-शान्तां, महा-मोक्ष-प्रदायिनीम्।
सदा षोडश-वर्षीयां, रक्ताम्बर-धरां पराम्*।
नानालङ्कार - भूषां वा, सर्व - सिद्धि - प्रदायिनीम्।।

'त'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ तकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'त'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'त'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ तकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'त'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ तकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो तकाराय ॐ

* 'पराम्' = सभी प्रकार की सृष्टि का विधान करनेवाली चिच्छक्ति।

३३. वर्ण-बीजाक्षर-'थ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'कृष्ण'
विष्णु-शक्ति-'भुक्ति'

रुद्र-रूप-'दण्डी'
रुद्र-शक्ति-'भद्रकाली'

थं

गणेश-रूप-'वरद'
गणेश-शक्ति-'लज्जा'

काम-रूप-'भृङ्ग'
काम-शक्ति-'चारु-नेत्रा'

क्षेत्रपाल-रूप-'स्थिर'

■ 'थ'-कार वर्ण का ध्यान ■

नील-वर्णां त्रि-नयनां, षड्-भुजां वरदां पराम्।
पीत-वस्त्र-परीधानां, सदा सिद्धि-प्रदायिनीम्*।।

■ 'थ'-कार वर्ण का मन्त्र ■

'ॐ थकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'थ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'थ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ थकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'थ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ थकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो थकाराय ॐ

* 'सदा सिद्धि-प्रदायिनीम्' = नित्य मन्त्र-सिद्धि अथवा वाक्-सिद्धि को प्रदान करनेवाली।

३४. वर्ण-बीजाक्षर-'द'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'सत्य'
विष्णु-शक्ति-'मुक्ति'

रुद्र-रूप-'अद्रि'
रुद्र-शक्ति-'योगिनी'

दं

गणेश-रूप-'वाम-देव'
गणेश-शक्ति-'दीर्घ-घोणा'

काम-रूप-'भ्रान्ताचार'
काम-शक्ति-'सुलोला'

क्षेत्रपाल-रूप-'दन्तुर'

'द'-कार वर्ण का ध्यान

चतुर्भुजां पीत-वस्त्रां, नव-यौवन-संस्थिताम्*।
अनेक - रत्न - घटित - हार - नूपुर - शोभिताम्।।

'द'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ दकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'द'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'द'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ दकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'द'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा–

ॐ दकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो दकाराय ॐ

* 'नव-यौवन-संस्थिताम्' = प्रत्यक्ष रूप से अनुग्रह करनेवाली।

३५. वर्ण-बीजाक्षर–'ध'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप–'सात्वत'
विष्णु-शक्ति–'मति'

रुद्र-रूप–'मीन'
रुद्र-शक्ति–'शङ्खिनी'

धं

गणेश-रूप–'वक्र-तुण्ड'
गणेश-शक्ति–'धनुर्द्धरा'

काम-रूप–'भ्रमावह'
काम-शक्ति–'चञ्चला'

क्षेत्रपाल-रूप–'धनद'

'ध'-कार वर्ण का ध्यान

षड् - भुजां मेघ - वर्णां च, रक्ताम्बर - धरां* पराम्।
वरदां शुभदां रम्यां, चतुर्वर्ग - प्रदायिनीम्।।

'ध'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ धकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ध'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ध'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ धकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ध'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा–

ॐ धकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो धकाराय ॐ

* 'रक्ताम्बर-धरां' = रजो-गुण-मय सौभाग्य-स्वरूपा।

६. वर्ण-बीजाक्षर-'न'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'शौरि'
विष्णु-शक्ति-'क्षमा'

रुद्र-रूप-'मेष'
रुद्र-शक्ति-'गर्जिनी'

नं

गेश-रूप-'द्विरण्डक'
गेश-शक्ति-'यामिनी'

काम-रूप-'मोहन'
काम-शक्ति-'दीर्घ-जिह्वा'

क्षेत्रपाल-रूप-'नति-क्रान्त'

'न'-कार वर्ण का ध्यान

दलिताञ्जन-वर्णाभां, ललज्जिह्वां सुलोचनाम् ।
चतुर्भुजां चकोराक्षीं, चारु-चन्दन-चर्चिताम्।
कृष्णाम्बर - परीधानामीषद् - हास्य - मुखीं सदा*।।

'न'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ नकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'न'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'न'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ नकाराय नमः' का ० बार जप करे।

तब 'न'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ नकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो नकाराय ॐ

* 'कृष्णाम्बर-परीधानामीषद्-हास्य-मुखीं सदा' = तमो-गुण एवं रजो-गुण का सदैव पोषण करनेवाली।

७. वर्ण-बीजाक्षर-'प'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'शूरी'
विष्णु-शक्ति-'रमा'

रुद्र-रूप-'लोहित'
रुद्र-शक्ति-'काल-रात्रि'

पं

गणेश-रूप-'सेनानी'
गणेश-शक्ति-'रात्रि'

काम-रूप-'मोहक'
काम-शक्ति-'रति-प्रिया'

क्षेत्रपाल-रूप-'प्रचण्डक'

'प'-कार वर्ण का ध्यान

विचित्र-वसनां देवी, द्वि-भुजां पङ्कजेक्षणाम्।
रक्त-चन्दन-लिप्ताङ्गीं, पद्म-माला-विभूषिताम्।।
मणि - रत्नादि - भूषितां, केयूर - हार - विग्रहाम्।
चतुर्वर्ग-प्रदां नित्यां, नित्यानन्द-मयीं पराम्*।।

'प'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ पकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'प'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'प'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ पकाराय नमः' ा १० बार जप करे।

तब 'प'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ पकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो पकाराय ॐ

नित्यानन्द-मयीं पराम्' = सदैव आनन्दित रहनेवाली सृष्टि-विधायिनी शक्ति।

३८. वर्ण-बीजाक्षर-'फ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'जनार्दन'
विष्णु-शक्ति-'उमा'

रुद्र-रूप-'शिखी'
रुद्र-शक्ति-'कुब्जिनी'

फं

गणेश-रूप-'ग्रामणी'
गणेश-शक्ति-'कामान्धा'

काम-रूप-'मोह'
काम-शक्ति-'लोलाक्षी'

क्षेत्रपाल-रूप-'फट्-कार'

'फ'-कार वर्ण का ध्यान

प्रलयाम्बुद-वर्णाभां*, ललज्जिह्वां चतुर्भुजाम्।
भक्ताभय-प्रदां नित्यां, नानालङ्कार-भूषिताम्।।

'फ'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ फकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'फ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'फ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ फकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'फ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ फकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो फकाराय ॐ

* 'प्रलयाम्बुद-वर्णाभां' = सृष्टि-विघटन-स्वरूपी भयङ्कर घनघोर काली छटावाले बादलों जैसी आभावाली।

३९. वर्ण-बीजाक्षर-'ब'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'भू-धर'
विष्णु-शक्ति-'क्लेदिनी'

रुद्र-रूप-'छगलण्ड'
रुद्र-शक्ति-'कपर्दिनी'

बं

गणेश-रूप-'मत्त'
गणेश-शक्ति-'शशि-प्रभा'

काम-रूप-'मोह-वर्द्धन'
काम-शक्ति-'शृङ्गिणी'

क्षेत्रपाल-रूप-'वीर-सङ्घ'

'ब'-कार वर्ण का ध्यान

नील-वर्णां त्रि-नयनां, नीलाम्बर-धरां पराम्*।
नाग-हारोज्ज्वलां देवीं**, द्वि-भुजां पद्म-लोचनाम्।।

'ब'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ बकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ब'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ब'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ बकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ब'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा–

ॐ बकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो बकाराय ॐ

* 'नीलाम्बर-धरां पराम्' = ज्ञान, मोक्ष-दायिनी सृष्टि-विधायिनी-शक्ति।

** 'नाग-हारोज्ज्वलां देवीं' = भीषण से भीषण कष्टों का शमन करनेवाली परम औषधि-स्वरूपा शक्ति।

४०. वर्ण-बीजाक्षर-'भ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'विश्व-मूर्ति'
विष्णु-शक्ति-'क्लिन्ना'

रुद्र-रूप-'द्विरण्डेश'
रुद्र-शक्ति-'महा-वज्रा'

भं

गणेश-रूप-'विमत्त'
गणेश-शक्ति-'लोल-लोचना'

काम-रूप-'मदन'
काम-शक्ति-'पावना'

क्षेत्रपाल-रूप-'भृङ्ग'

'भ'-कार वर्ण का ध्यान

तडित्-प्रभां महा-देवीं, नाग-कङ्कण-शोभिताम्*।
चतुर्वर्ग-प्रदां देवीं, साधकाभीष्ट-सिद्धिदाम्।।

'भ'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ भकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'भ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'भ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ भकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'भ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ भकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो भकाराय ॐ

* 'नाग-कङ्कण-शोभिताम्' = कड़े के रूप में नागों को धारण करनेवाली अर्थात् आपदाओं से रक्षा करनेवाली। शक्ति

४१. वर्ण-बीजाक्षर-'म'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'वैकुण्ठ'
विष्णु-शक्ति-'वसुदा'

रुद्र-रूप-'महा-काल'
रुद्र-शक्ति-'जया'

मं

गणेश-रूप-'मत्त-वाहन'
गणेश-शक्ति-'चञ्चला'

काम-रूप-'मन्मथ'
काम-शक्ति-'मदना'

क्षेत्रपाल-रूप-'मेघ-भासुर'

■ 'म'-कार वर्ण का ध्यान ■

कृष्णां दश-भुजां भीमां, पीत-लोहित-लोचनाम्*।
कृष्णाम्बर-धरां** नित्यां, धर्म-कामार्थ-मोक्षदाम्।।

■ 'म'-कार वर्ण का मन्त्र ■

'ॐ मकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'म'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'म'-कार वर्ण के मन्त्र '**ॐ मकाराय नमः**' का १० बार जप करे।

तब 'म'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ मकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो मकाराय ॐ

* 'पीत-लोहित-लोचनाम्' = 'पीत'-ऐश्वर्य, 'लोहित'-सौभाग्य प्रदान करनेवाली।

** 'कृष्णाम्बर-धरां' = 'काले रङ्ग के वस्त्र धारण करनेवाली अर्थात् सभी को अपने में समाहित करनेवाली।

४२. वर्ण-बीजाक्षर-'य'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'पुरुषोत्तम'
विष्णु-शक्ति-'वसुधा'

रुद्र-रूप-'कपाली'
रुद्र-शक्ति-'सुमुखेश्वरी'

यं

गणेश-रूप-'जटी'
गणेश-शक्ति-'दीप्ति'

काम-रूप-'मातङ्ग'
काम-शक्ति-'माला'

क्षेत्रपाल-रूप-'युगान्त'

■ 'य'-कार वर्ण का ध्यान ■

धूम्र-वर्णां महा-रौद्रीं, षड्-भुजां रक्त-लोचनाम्।
रक्ताम्बर-परीधानां, नानालङ्कार-भूषिताम्।।
महा-मोक्ष-प्रदां नित्यामष्ट-सिद्धि-प्रदायिनीम्।
त्रि-शक्ति-सहितं वर्णं, त्रि-विन्दु-सहितं तथा *।।

■ 'य'-कार वर्ण का मन्त्र ■

'ॐ यकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'य'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'य'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ यकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'य'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा–

ॐ यकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो यकाराय ॐ

* 'त्रि-शक्ति-सहितं...' = 'इच्छा-ज्ञान-क्रिया' तथा 'वाक्-काम-शक्ति'-मय वर्ण।

४३. वर्ण-बीजाक्षर-'र'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'बली'
विष्णु-शक्ति-'परा'

रुद्र-रूप-'भुजङ्गेश'
रुद्र-शक्ति-'रेवती'

रं

गणेश-रूप-'मुण्डी'
गणेश-शक्ति-'शुभगा'

काम-रूप-'भृङ्ग-नायक'
काम-शक्ति-'हंसिनी'

क्षेत्रपाल-रूप-'रौरव'

'र'-कार वर्ण का ध्यान

ललज्जिह्वां* महा-रौद्रीं, रक्तास्यां रक्त-लोचनाम्।
रक्त - वर्णामष्ट - भुजां, रक्त - पुष्पोपशोभिताम्।।
रक्त - माल्याम्बर - धरां, रक्तालङ्कार - भूषिताम्।
महा-मोक्ष-प्रदां नित्यामष्ट-सिद्धि-प्रदायिकाम्।।

'र'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ रकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'र'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'र'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ रकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'र'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ रकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो रकाराय ॐ

* 'ललज्जिह्वां' = सदैव सक्रिय।

४४. वर्ण-बीजाक्षर-'ल'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'बलानुज'
विष्णु-शक्ति-'परायणा'

रुद्र-रूप-'पिनाकी'
रुद्र-शक्ति-'माधवी'

लं

गणेश-रूप-'खड्गी'
गणेश-शक्ति-'दुर्भगा'

काम-रूप-'गायक'
काम-शक्ति-'विश्वतोमुखी'

क्षेत्रपाल-रूप-'लम्बोष्ठ'

'ल'-कार वर्ण का ध्यान

चतुर्भुजां पीत-वस्त्रां, रक्त-पङ्कज-लोचनाम्।
सर्वदा वरदां भीमां, सर्वालङ्कार-भूषिताम्।।
योगीन्द्र-सेवितां नित्यां, योगिनीं योग-रूपिणीम्*।
चतुर्वर्ग - प्रदां देवीं, नाग - हारोपशोभिताम्।।

'ल'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ लकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ल'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ल'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ लकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ल'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा—

ॐ लकाराय नमः
अभीष्ट-मन्त्र
नमो लकाराय ॐ

* 'योगिनीं योग-रूपिणीम्' = डाकिनी आदि छः योगिनियाँ, जो जीवात्मा को परमात्मा से मिलाती हैं।

४५. वर्ण-बीजाक्षर-'व'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'बाल'
विष्णु-शक्ति-'सूक्ष्मा'

रुद्र-रूप-'खड्गीश'
रुद्र-शक्ति-'वारुणी'

वं

गणेश-रूप-'वरेण्य'
गणेश-शक्ति-'शिवा'

काम-रूप-'गीती'
काम-शक्ति-'नन्दिनी'

क्षेत्रपाल-रूप-'वसव'

■ 'व'-कार वर्ण का ध्यान ■

कुन्द-पुष्प-प्रभां देवीं, द्वि-भुजां पङ्कजेक्षणाम्।
शुक्ल-माल्याम्बर-धरां, रत्न-हारोज्ज्वलां पराम्।
साधकाभीष्टदां सिद्धां, सिद्धिदां सिद्ध-सेविताम्*।।

■ 'व'-कार वर्ण का मन्त्र ■

'ॐ वकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'व'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'व'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ वकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'व'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ वकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो वकाराय ॐ

* 'सिद्ध-सेविताम्' = सिद्ध सन्तों, महात्माओं, साधकों द्वारा पूजित।

४६. वर्ण-बीजाक्षर-'श'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'वृषघ्न'
विष्णु-शक्ति-'सन्ध्या'

रुद्र-रूप-'वकेश'
रुद्र-शक्ति-'वायवी'

शं

गणेश-रूप-'वृष-केतन'
गणेश-शक्ति-'भर्गा'

काम-रूप-'नर्त्तक'
काम-शक्ति-'रमणी'

क्षेत्रपाल-रूप-'शुक-नन्द'

'श'-कार वर्ण का ध्यान

चतुर्भुजां चकोराक्षीं, चारु-चन्दन-चर्चिताम्।
शुक्ल-वर्णां त्रि-नयनां, वरदां च शुचि-स्मिताम्*।।
रत्नालङ्कार-भूषाढ्यां, श्वेत-माल्योपशोभिताम्।
देव-वृन्दैरभिवन्द्यां, सेवितां मोक्ष-कांक्षिभिः।।

'श'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ शकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'श'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'श'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ शकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'श'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा—

ॐ शकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो शकाराय ॐ

* 'शुचि-स्थिताम्' = मधुर मुस्कानवाली।

४७. वर्ण-बीजाक्षर-'ष'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'वृष'
विष्णु-शक्ति-'प्रज्ञा'

रुद्र-रूप-'श्वेत'
रुद्र-शक्ति-'रक्षो-विदारिणी'

षं

गणेश-रूप-'भक्ष्य-प्रिय'
गणेश-शक्ति-'भगिनी'

काम-रूप-'खेलक'
काम-शक्ति-'कान्ति'

क्षेत्रपाल-रूप-'षडाल'

'ष'-कार वर्ण का ध्यान

शुक्लाम्बरां शुक्ल-वर्णां, द्वि-भुजां रक्त-लोचनाम्।
श्वेत-चन्दन-लिप्ताङ्गीं, मुक्ता-हारोपशोभिताम्।।
गन्धर्व - गीयमानां च, सदानन्द - मयीं पराम्।
अष्ट-सिद्धि-प्रदां नित्यां, भक्तानन्द-विवर्द्धिनीम्*।।

'ष'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ षकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ष'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ष'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ षकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ष'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा—

ॐ षकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो षकाराय ॐ

* 'भक्तानन्द-विवर्द्धिनीम्' = भक्तों के आनन्द का वर्धन करनेवाली।

४८. वर्ण-बीजाक्षर-'स'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'हंसः'
विष्णु-शक्ति-'प्रभा'

रुद्र-रूप-'भृगु'
रुद्र-शक्ति-'सहजा'

सं

गणेश-रूप-'गणेश'
गणेश-शक्ति-'भोगिनी'

काम-रूप-'उन्मत्त'
काम-शक्ति-'कल-कण्ठी'

क्षेत्रपाल-रूप-'सुनामा'

'स'-कार वर्ण का ध्यान

करीष-भूषिताङ्गीं* च, साट्टहासां दिगम्बरीम्।
अस्थि-माल्यामष्ट-भुजां, वरदाम्बुजेक्षणाम्।।
नागेन्द्र-हार-भूषाढ्यां, जटा-मुकुट-मण्डिताम्।
सर्व-सिद्धि-प्रदां नित्यां, धर्म-कामार्थ-मोक्षदाम्।।

'स'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ सकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'स'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'स'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ सकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'स'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा–

ॐ सकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो सकाराय ॐ

* 'करीष-भूषिताङ्गीं' = भस्म से विभूषित।

४९. वर्ण-बीजाक्षर-'ह'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'वराह'
विष्णु-शक्ति-'निशा'

रुद्र-रूप-'नकुली'
रुद्र-शक्ति-'लक्ष्मी'

हं

गणेश-रूप-'मेघ-नाद'
गणेश-शक्ति-'सुभगा'

काम-रूप-'मत्तक'
काम-शक्ति-'वृकोदरी'

क्षेत्रपाल-रूप-'हंध्रक'

■ 'ह'-कार वर्ण का ध्यान ■

चतुर्भुजां रक्त-वर्णां, शुक्लाम्बर-विभूषिताम्।
रक्तालङ्कार - संयुक्तां, वरदां पद्म - लोचनाम्।।
ईषद्-हास्य-मुखीं लोलां*, रक्त-चन्दन-चर्चिताम्।
स्याद् दात्रीं च चतुर्वर्ग-प्रदां सौम्यां मनोहराम्।
गन्धर्व - सिद्ध - देवाद्यैर्ध्यातामाद्यां सुरेश्वरीम्।।

■ 'ह'-कार वर्ण का मन्त्र ■

'ॐ हकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ह'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ह'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ हकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ह'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा–

ॐ हकाराय नमः
अभीष्ट-मन्त्र
नमो हकाराय ॐ

* 'लोलां' = लक्ष्मी।

५०. वर्ण-बीजाक्षर-'ळ'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'विमल'
विष्णु-शक्ति-'अमोधा'

रुद्र-रूप-'शिव'
रुद्र-शक्ति-'व्यापिनी'

ळं

गणेश-रूप-'व्यापी'
गणेश-शक्ति-'काल-रात्रि'

काम-रूप-'विलासी'
काम-शक्ति-'मेघ-श्यामा'

रुद्र-रूप महादेव ने प्रलयाग्नि से पृथ्वी का उद्धार करते समय पृथ्वी-बीज 'ल-कार' का भी दुबारा उद्धार किया था। अतः इस ल-कार को लेकर 'वर्ण-माला' में दो 'ल' हैं।

'ळ'-कार (द्वितीय ल-कार) वर्ण का ध्यान

पाशाभय-कराळार्ण-मूर्तिः* श्वेता गज-स्थिता।

'ळ'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ ळकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

पहले 'ळ'-कार वर्ण का ध्यान करे, फिर 'ळ'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ ळकाराय नमः' का १० बार जप करे।

तब 'ळ'-कार वर्ण के मन्त्र से पुटित अपने अभीष्ट-मन्त्र का १० बार जप करे। यथा-

ॐ ळकाराय नमः

अभीष्ट-मन्त्र

नमो ळकाराय ॐ

* 'पाशाभय-कराळार्ण-मूर्तिः' = एक हाथ में 'पाश' और दूसरे हाथ में 'अभय-मुद्रा'-भयङ्कर स्वरूपवाली।

५१. वर्ण-बीजाक्षर-'क्ष'-कार मातृका की साधना

विष्णु-रूप-'नृसिंह'
विष्णु-शक्ति-'विद्युता'

रुद्र-रूप-'संवर्तक'
रुद्र-शक्ति-'माया'

क्षं

गणेश-रूप-'गणेश्वर'
गणेश-शक्ति-'कालिका'

काम-रूप-'लोभ-वर्द्धन'
काम-शक्ति-'लोभ-वर्द्धिनी'

'क्ष'-कार वर्ण का ध्यान

क्ष-कारं शृणु चार्वङ्गि!, कुण्डली-त्रय-संयुतम्।
चतुर्वर्ग-मयं वर्णं, पञ्च-देव-मयं सदा।।
पञ्च-प्राणात्मकं वर्णं, त्रि-शक्ति-सहितं सदा।
त्रि-विन्दु-सहितं वर्णमात्मादि-तत्त्व-संयुतम्।
शरच्चन्द्र-प्रतीकाशं, हृदि भावय सुन्दरि!।।

'क्ष'-कार वर्ण का मन्त्र

'ॐ क्षकाराय नमः'

मन्त्र-सिद्धि का उपाय

'क्ष'-कार-वर्ण-माला का सुमेरु है। अतः इसके मन्त्र से पुटित अभीष्ट मन्त्र का जप नहीं किया जाता है।

अतः शरद् ऋतु के चन्द्र के समान अत्यन्त उज्ज्वल आत्मादि-तत्त्व-मय 'क्ष'-कार का केवल ध्यान कर, फिर 'क्ष'-कार वर्ण के मन्त्र 'ॐ क्षकाराय नमः' का १० बार जप किया जाता है।

'वर्ण-बीजाक्षर-मातृका'-साधना हेतु यहाँ संक्षिप्त एवं वृहत् दो प्रकार की स्तुतियाँ दी जा रही हैं।
समय-समय पर केवल इनका 'पाठ' कर 'वर्ण-बीजाक्षर-मातृका'-साधना कर सकते हैं। -सं०

अक्ष-माला-स्तुतिः

॥ पूर्व-पीठिका ॥

श्रीगायत्रीं त्रयीं विद्यां, प्रणम्य परमेश्वरीम्।
'अक्ष-माला-स्तुतिं' दिव्यां, करोमि सुखदां सताम्।।१

॥ मूल-स्तुति ॥

अथाऽव्यक्ताऽऽदि-शक्तिर्या, महा-देवीन्दिरेश्वरीम्।
उमोर्ध्व-केशी ऋग्वेदा, 'ऋ'-रूपा ऋद्धि-दायिनी।।१
लृप्तधर्माऽस्ति 'लृ'-नाम्नी, त्वेकाक्षर-विहारिणी।
ऐन्द्री ह्योङ्कार-रूपा या, चौपासन-फल-प्रदा।।२
अण्ड-मध्य-स्थिता देवी, 'अः'-कार-मनु-रूपिणी।
षोडशीं लोक-पूज्यां तां, सर्वदा संस्मराम्यहम्।।३
ततो व्यञ्जन-वर्णस्थां, कमलां खग-वाहनाम्।
गङ्गां च धर्मदां देवीं, 'ङ'-क्षरां प्रणमाम्यहम्।।४
चण्डिकां सततं वन्दे, देवीं छन्दोऽनुगां पराम्।
जयन्तीं क्षण-निर्घोषां, 'ञ'-रूप-वृष-वाहनाम् ।।५
टङ्क-वर्णान्वितां दिव्यां, 'ठ-ठ'-शब्द-निनादिनीम्।
डमरू-भूषणां देवीं, ढक्का-हस्तां नमाम्यहम्।।६
'ण'-वर्ण-रूपिणीं दिव्यां, तप्त-काञ्चन-भूषणाम्।
थावरां* सततं वन्दे, दण्डकारण्य-वासिनीम्।।७
धर्म-शीलां नदी-रूपां, पर-ब्रह्मात्मिकां तथा।
फलदां बहु-नेत्रां च, भवानीं प्रणतोऽस्म्यहम्।।८
मालिनीं तां महा-मायां, पञ्च-विंशति-वर्णिकाम्।
नत्वा पुनः स्मराम्यत्र, 'य'-क्षवर्णात्मिकाद्भुताम्।।९
यक्षिणीं योग-मायां तां, रामां लक्ष्मीं सुख-प्रदाम्।
वरदां शारदां दिव्यां, षण्मुखीं च सरस्वतीम्।।१०
हरि-रुद्र-प्रियां देवीं, क्षमा-शीलां नवात्मिकाम्।
पञ्चाशद्-वर्ण-रूपां तां, स्मरामि सर्वदा शुभाम्।।११

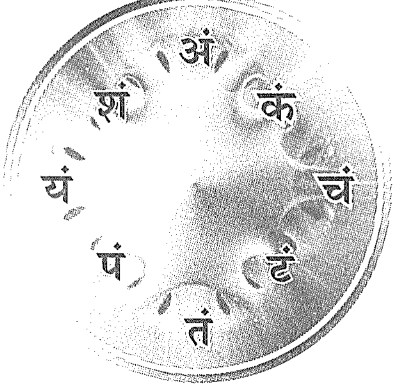

॥ फल-श्रुति ॥

इति रत्न-मयीं देवीं, गायत्री-तुष्टि-कारिणीम्।
स्तुतिं पठन्नरो नित्यं, ब्रह्म-सायुज्यमाप्नुयात्।।१

॥ श्री गार्ग्य-मुनि 'द्विजेन्द्र'-कवि-कृता 'अक्ष-माला-स्तुतिः'॥

* थावराम् = स्थावराम्

'अ' से लेकर 'क्ष' तक के सभी अक्षरों की आधार-स्वरूपा

श्री त्रि-वेणी देवी की स्तुति

ॐ-काराब्ज-निवास-मत्त-मधुपामुद्यान-पीठ-स्थिताम्।
ॐ-कारा-गण-काम-कल्प-लतिकामोजस्विनीमौषधीम्।।
ॐ-कारेश्वर-केवल-प्रिय-सखीमोङ्कार-नाद-प्रियाम्।
ॐ-कार-प्रभवां विचित्र-विभवां देवीं त्रिवेणीं भजे।।१।।

जो **ॐ-कार-**रूपी कमल-वाटिका के पीठ पर मस्त भौरों की तरह निवास करती हैं, **ॐ-कार** के उपासकों की कामना सिद्ध करने के लिए कल्प-वृक्ष के समान हैं, तेजोवर्धक औषधि के तुल्य हैं, **ॐ-कारेश्वर (कृष्ण)** की एक-मात्र प्रिय सखी हैं, जिन्हें **ॐ-कार-**शब्द प्रिय है, **ॐ-कार** से जिनकी उत्पत्ति हुई है और जो विचित्र ऐश्वर्य-शालिनी हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।१।।

अद्वैतामभि-वाञ्छितार्थ-फलदामव्याहतामव्ययाम्।
अष्टैश्वर्य-करामनन्त-जयदामब्ज-स्थितामक्षरीम्।।
आब्धि-ग्रास-नुतामशेष-जननीमर्काग्नि-कोटि-प्रभाम्।
अज्ञानान्ध-हरामपार-करुणां देवीं त्रिवेणीं भजे।।२।।

जो अद्वैत-स्वरूपा, मनोवाञ्छित फल-दायिनी, अव्याहत गतिवाली, अविनाशिनी, आठो सिद्धियों को देनेवाली, सदा विजय प्राप्त करानेवाली, कमल पर स्थित **अक्षर-**स्वरूपा हैं, जिनकी स्तुति अगस्त्य जी किया करते हैं, जो जगज्जननी करोड़ों सूर्य एवं अग्नि के समान चमकनेवाली हैं, अज्ञान-रूपी अन्धकार का नाश करनेवाली हैं और जो अपार करुणा-मयी हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।२।।

आम्नायागम-सेविताधि-युगलामापीनुतुङ्ग-स्तनीम्।
आपो-ज्योति-रसाभि-पूर्ण-लहरीमानन्द-सन्धायिनीम्।।
आधारामरुणामनेक-कुशलामाकार-संशोभिताम्।
आदि-क्षान्त-समस्त-वर्ण-निलयां देवीं त्रिवेणीं भजे।।३।।

जिनके दोनों चरणों की सेवा वेद और तन्त्र-शास्त्र किया करते हैं, स्तन स्थूल एवं उत्तुङ्ग हैं, जिनका जल निर्मल, स्वादिष्ट तथा तरङ्गों से युक्त है, जो आनन्द देनेवाली हैं, सबको धारण करनेवाली हैं, जिनका वर्ण लाल है, जो अनेक कार्यों में कुशल हैं, जिनकी आकृति सुन्दर है और जो **'अ'** से लेकर **'क्ष'** तक के सभी अक्षरों की आधार हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।३।।

इष्टानिष्ट-विवर्जितामिह पर-स्वामैक्य-सौख्य-प्रदाम्।
इच्छा-सिद्धि-विलास-वैभव-परामिच्छा-क्रिया-संयुताम्।।
इच्छा-शक्ति-धनुः-शराभि-दधतीमिन्द्रार्चितामिन्दिराम्।
इष्टावाप्त-वरिष्ठ-वाक्-प्रकरिणीं देवीं त्रिवेणीं भजे।।४।।

जो अच्छे और बुरे, अपने और पराए के भेद-भाव से दूर हैं तथा सुख प्रदान करानेवाली एक-मात्र स्वामिनी हैं, इच्छा-शक्ति, विलास-वैभव से सम्पन्न यथेच्छ आचरण करनेवाली हैं, इच्छा-शक्ति-रूपी धनुष और बाण को धारण करती हैं, इन्द्र जिनकी पूजा करते हैं, जो धन तथा मनो-कामना पूर्ण करती हैं, जिनकी वाणी बड़ी ही ओजस्विनी है— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।४।।

ईषत् - स्मेरे-विराजमान-वदनामीशान-देवार्चिताम्।
ईशित्वादि-समस्त-सिद्धि-सहितामीङ्कार-वर्णात्मिकाम्।।
ईशां काम-कलां विशुद्ध-मनसां विश्वेश्वरीमीश्वरीम्।
ईषन्त्री-सकलार्थ-दीपन-करीं देवीं त्रिवेणीं भजे।।५।।

जिनका मुख मन्द-मन्द मुस्कान से सुशोभित है, शङ्कर जिनका पूजन करते हैं, जो **'ईशित्व'** (सबको वश में रखना) आदि सम्पूर्ण सिद्धियों से युक्त हैं, जिनका स्वरूप **ई-कार-**अक्षर-मय है, जो सबकी स्वामिनी हैं, **'काम'** की **'कला'** हैं, पवित्र अन्तःकरणवाली हैं, विश्व की शासिका हैं, ईश्वरी हैं तथा सकल पदार्थों को प्रकाशित करनेवाली हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।५।।

उत्फुल्लारुण - पद्म-नेत्र-युगलामुद्दण्ड-दैत्यापहाम्।
उद्योतोज्ज्वल-तीर्थ-राज-रमणीमुल्लास-तेजोवतीम्।।
उत्कर्षाभय-दान-पेशल-करामुच्छ्वास-शक्ति-प्रदाम्।
उर्वश्यर्चित-पादुकां पर-कलां देवीं त्रिवेणीं भजे।।६।।

प्रस्फुटित लाल कमल के समान जिनके नेत्र हैं, जो उद्दण्ड दैत्यों का नाश करनेवाली हैं, प्रभा से विलसित हैं, तीर्थ-राज प्रयाग की प्रिया हैं, उल्लास और तेज से युक्त हैं, उत्कर्ष एवं अभय-दान देने में सिद्ध-हस्त हैं, जीवन-शक्ति प्रदान करनेवाली हैं, जिनकी खड़ाऊँ की पूजा उर्वशी करती हैं तथा जो उत्कृष्ट कला-स्वरूपा हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।६।।

ऊर्ध्व-स्रोत-परा-सरां त्रि-नयनामूर्ध्व-स्वरामूर्ध्वगाम्।
ऊर्ध्वाश्वास-सुषुम्न-मार्ग-गमनामूर्ध्वे ज्वलज्ज्वालिनीम्।।
ऊर्ध्वाधः-परिपूर्ण-धाम-लहरीमूर्ध्व-प्रभां भास्वराम्।
ऊर्ध्व-स्थान-निवासिनीं शुभ-करीं देवीं त्रिवेणीं भजे।।७।।

जो ऊर्ध्व-गामी प्रवाह से युक्त हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जिनका स्वर ऊर्ध्व है, जो ऊर्ध्व-गामिनी हैं, ऊर्ध्व-उच्छ्वास एवं सुषुम्ना नाड़ी के मार्ग से गमन करनेवाली हैं, ऊपर को उठनेवाली भास्वर-ज्वाला से देदीप्यमान हैं, ऊपर और नीचे अत्यन्त तेज तरङ्गों से व्याप्त हैं, ऊर्ध्व कान्तिवाली हैं, जाज्वल्यमान् हैं, ऊर्ध्व स्थान में निवास करनेवाली हैं तथा शुभ करनेवाली हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥७॥

ऋक्-सामैरभि-वन्दितां ऋषि-गणैर्ध्येयां जगन्मोहिनीम्।
ऋत्विक्-श्रोत्रिय-यज्ञ-सेवित-तरां ऋग्-दुःख-संहारिणीम्॥
ऋग्-घोरासुर-मर्दिनीं ऋतु-मतीं सिंहासनाधीश्वरीम्।
ऋक्-क्षामार्चित-पाद-पद्म-युगलां देवीं त्रिवेणीं भजे॥८॥

ऋग्वेद और साम-वेद जिनकी अभिवन्दना करते हैं, ऋषि-वृन्द जिनका ध्यान करते हैं, जो जगत् को मोह में डाल देती हैं, ऋत्विक् एवं श्रोत्रिय लोग यज्ञ द्वारा जिनकी उपासना करते हैं, जो ऋचाओं द्वारा दुःख का संहार तथा भयङ्कर असुरों का मर्दन करनेवाली हैं, ऋतु-मती हैं, सिंहासन की अधीश्वरी हैं और जिनके चरणारविन्दों की पूजा 'ऋग्-वेद' एवं 'साम-वेद' किया करते हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥८॥

ॠत्यकल्पित नासिकां ॠजु-करां ॠङ्कार-भूषोज्ज्वलाम्।
ॠ-दिव्यामृत - पूर्ण-हेम-लहरीं ॠ-वर्ण-सञ्चारिणीम्॥
ॠकाराक्षर-रूपिणीं गुरु-तरां ॠ-दीर्घ-सारां गणाम्।
ॠ-नित्यां ॠ-गणां भयापहारिणीं देवीं त्रिवेणीं भजे॥९॥

जिनकी नासिका **ॠ-अक्षर** के समान है, कल्याण-कारिणी हैं, जो **ॠकार**-रूप आभूषण से प्रकाशमान हैं, **ॠ-कार-रूप** दिव्य एवं अमृत-पूर्ण स्वर्ण-लहरी के समान हैं, **ॠ-वर्ण** के साथ सञ्चरण करनेवाली हैं, **ॠ-कार**-अक्षर-स्वरूपा हैं, अतिशय विशाल हैं, **दीर्घ ऋ-कार** की सार हैं, **ॠ-अक्षर** में नित्य रूप से अवस्थित हैं, **ॠ-कार** ही गण हैं, भय को दूर करनेवाली हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥९॥

लृब्ध-द्रोह-विनाश-हेतु-चतुरां लृ-लॄ-कपोलाक्षराम्।
लृत्त-प्रेत-पिशाच-लुण्ठन-करां लृ-लॄ-कला-शोभिताम्॥
लृप्तां लृप्त-विहीन-विद्रुम-लतां लोकेषु विख्यातिनीम्।
लृ-लॄ-निर्मित-नील-कान्ति-चिकुरां देवीं त्रिवेणीं भजे॥१०॥

जो ईर्ष्या और द्रोह को नष्ट करने में पटु हैं, जिन्हें कपोल से उच्चरित होनेवाले **'लृ'** और **'लॄ'** अक्षर प्रिय हैं, जिनके हाथ भूत, प्रेत और पिशाच के लूटने में दक्ष हैं, जो **'लृ'** और **'लॄ'** अक्षरों की कला से सुशोभित हैं, जो जगत्-विख्यात हैं, जिनके केश **'लृ'** और **'लॄ'** अक्षरों की नील-कान्ति से परिपूर्ण हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥१०॥

लृ-कारां परम-प्रकाश-लहरीं लृ-कार-मध्ये स्थिताम्।
लोभ-क्रोध-निराकरां सु-रुचिरां लावण्य-नीलालकाम्।।
लीला-लब्ध-यशस्विनीं स्थिर-तरां लृ-ङ्कार-नित्यार्चिताम्।
लक्षार्क-प्रतिम-प्रदीप-कलिकां देवीं त्रिवेणीं भजे।।११।।

जो **'लृ'** अक्षर से युक्त हैं, महा-प्रकाश की तरङ्ग-रूप हैं, लृ-कार के बीच में रहनेवाली हैं, लोभ और क्रोध का निवारण करनेवाली हैं, अत्यन्त सुन्दरी हैं, घुँघराले तथा नीले रङ्ग के बालों से सुशोभित हैं, अपनी लीलाओं के द्वारा यश प्राप्त करनेवाली हैं, अत्यन्त स्थिर रहनेवाली हैं, **लृकार** से नित्य पूजित होनेवाली हैं तथा लाखों सूर्य के समान देदीप्यमान हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।११।।

एक-प्राभव-शालिनीं निज-सुखामेकाग्र-चित्त-प्रदाम्।
एकां निश्चल-योगिनीमनुपमामेकाक्षरांशाश्रिताम्।।
एकाकार - विराजमान-तरुणीमेक-प्रतापाज्वलाम्।
एकाभां नव-यावकार्द-चरणां देवीं त्रिवेणीं भजे।।१२।।

जो महा-प्रभुता से सम्पन्न हैं, अपने आप आनन्दित रहनेवाली हैं, चित्त को एकाग्र करनेवाली हैं, अकेली रहनेवाली हैं, निश्चल होकर योगाभ्यास करनेवाली हैं, जो अनुपम हैं, एकाक्षर के भाग पर आधारित हैं, एक रूप में सदा युवती हैं, अद्‌भुत प्रताप से युक्त हैं, विशिष्ट शोभावाली हैं, चरणों में महावर लगाए हुई हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।१२।।

ऐंकारारुण-वह्नि-चक्र-निलयामैरावताधिष्ठिताम्।
ऐंकारांकुर-दीप्त-काञ्चन-लतामैङ्कार-वर्णात्मिकाम्।।
ऐंकाराम्बुधि-चन्द्रिकामसुरहामैङ्कार-पीठ-स्थिताम्।
ऐंकारासन-गर्भितानल-शिखां देवीं त्रिवेणीं भजे।।१३।।

अग्नि-समूहों को धारणा करनेवाली, **ऐंकार** के समान लाल तथा ऐरावत पर आसीन, **ऐंकार** के अंकुर के समान प्रकाशवती स्वर्ण-लता हैं, **ऐंकार**-अक्षर-स्वरूपा हैं, **ऐंकार**-रूपी समुद्र में चाँदनी के समान, असुरों को नाश करनेवाली, **ऐंकार** की पीठ पर विराजमान, **ऐंकार**-रूपी आसन पर स्थित अग्नि-शिखा हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।१३।।

औन्नत्यामभय - प्रदान-चतुरामौघ-त्रयाराधिताम्।
औद्धत्यामघ-शोषणां सु-विदुषामोघोघ-बुद्धि-प्रदाम्।।
औद्-गीतां सकलैः पुराण-पुरुषैर्वेदे पदैस्स-क्रमैः।
ओंकाराक्षर - राज-राज्य-वशगां देवीं त्रिवेणीं भजे।।१४।।

जो उन्नति और अभय प्रदान करने में चतुर हैं, गङ्गा-यमुना-सरस्वती जिनकी उपासना करती हैं, जो लोगों की उद्दण्डता और पापों का नाश करती हैं, विद्वानों को बुद्धि एवं आनन्द प्रदान करती हैं, वेद-पुराण जिनकी महिमा गाते हैं, जो **ओंकार**-अक्षर मन्त्र की वशीभूत हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।१४।।

अम्बाम्बर-मध्य-देश-ललितामम्बा-त्रयाराधिताम्।
अम्बोजोद्भव-याग-सिद्ध-वरदामम्भोज-पत्रेक्षणाम्।।
अन्तर्ध्यान-विधान-तत्त्व-विषदामङ्गा-सुधीमङ्गणाम्।
अङ्गस्थामनुभूति-भावन-रतां देवीं त्रिवेणीं भजे।।१५।।

जो मध्य आकाश में शोभायमान होती हैं, तीनों महा-शक्तियाँ जिनकी आराधना करती हैं, जो ब्रह्माजी के यज्ञ को सफल करती एवं वरदान देती हैं, जिनकी आँखें कमल-पत्र के समान हैं, जो अन्तर्ध्यान होने की कला में निपुण हैं, जिनकी उपासना सुधी-गण किया करते हैं, जो अनुभूति एवं ध्यान में लीन रहती हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।१५।।

अर्कामाल-निरूपणामनिमिषामध्यात्म-विद्यां सुधाम्।
आद्यामक्ष-तरामनुग्रह-करां क्षीराब्धि-मध्य-स्थिताम्।।
अन्तर्याग - तपः-प्रसन्न-सुमुखीमष्टाङ्ग-योगीश्वरीम्।
आचार्यामवधूत - चर्य-महिमां देवीं त्रिवेणीं भजे।।१६।।

जो सूर्य के समान हैं, आत्म-चिन्तन में रत रहती हैं, जिनकी पलकें नहीं गिरतीं, जो अध्यात्म-विद्या की अमृत हैं, सबकी आदि हैं, धरती की धुरी हैं, दया-मयी हैं, क्षीर-सागर के मध्य में निवास करनेवाली हैं, यज्ञ और तप से प्रसन्न रहनेवाली हैं, अष्टाङ्ग-योग (१ यम, २ नियम, ३ आसन, ४ प्राणायाम, ५ प्रत्याहार, ६ धारणा, ७ ध्यान और ८ समाधि) की स्वामिनी हैं, अवधूताचार्य, संन्यासी लोग जिनकी महिमा गाते हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।१६।।

कर्पूरागुरु - कुंकुमाङ्कित-कुचां कर्पूर-वर्ण-स्थिताम्।
कष्टोत्कृष्ट-निकृष्ट-कर्म-दहनां कामेश्वरीं कामिनीम्।।
कामाक्षीं करुणा-रसार्द्र-हृदयां कल्पान्तर-स्थायिनीम्।
कस्तूरी-तिलकाभिराम-निलयां देवीं त्रिवेणीं भजे।।१७।।

जिनके स्तन कर्पूर, अगर और केसर से अङ्कित हैं, जिनका वर्ण कर्पूर के समान शुभ्र है, जो कष्ट-कारक उत्कृष्ट एवं निकृष्ट कर्मों को जलानेवाली हैं, काम की ईश्वरी कामिनी हैं, कामाक्षी हैं, जिनका हृदय करुणा-रस से सराबोर है, जिनका कल्पान्तर होने पर भी नाश नहीं होता, जो कस्तूरी-तिलक से सुशोभित तथा सुन्दरता की धाम हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।१७।।

खस्थां खड्ग-धरां खरासुर-हतां खट्वाङ्ग-हस्तां खगाम्।
खट्वस्थां खल-लोक-नाशन-करां खर्वीं खचेन्द्रार्चिताम्॥
खाकारां खम-वाहनार्चित-पदां खण्डेन्दु-भूषोज्ज्वलाम्।
ख-व्याप्तां कलि-दोष-खण्डन-करीं देवीं त्रिवेणीं भजे॥१८॥

जो आकाश में स्थित होती हैं, खड्ग को धारण करती हैं, दुष्ट असुरों को मारनेवाली हैं, खट्वाङ्ग नामक अस्त्र को हाथ में रखती हैं, आकाश में विचरण करनेवाली हैं, खट्वाङ्ग पर आसीन हैं, दुष्टों का नाश करनेवाली हैं, कद में छोटी हैं, गरुड़ द्वारा पूजित हैं, आकाश-जैसी विस्तृत आकृतिवाली हैं; ब्रह्मा से पूजित चरणोंवाली हैं, अर्ध-चन्द्र-रूपी आभूषण से उद्भासित हैं, आकाश में व्याप्त हैं तथा कलियुग के दोषों का नाश करनेवाली हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥१८॥

गायत्रीं गरुड़-ध्वजां गगनगां गन्धर्व-गान-प्रियाम्।
गम्भीरां गज-गामिनीं गिरि-सुतां गन्धाक्षतालंकृताम्॥
गङ्गा-गौतम-गर्ग-सन्नुत-पदां गां गौतमीं गोमतीम्।
गौरी - गर्व-गरिष्ठ-यौवन-वतीं देवीं त्रिवेणीं भजे॥१९॥

जो अपने गायकों (भक्तों) की रक्षा करती हैं, गरुड़ जिनका चिह्न है, जो आकाश में गमन करती हैं, जिन्हें गन्धर्वों का सङ्गीत प्रिय है, जो गम्भीर हैं, हाथी के समान मन्द गति से चलती हैं, पर्वत की पुत्री (पार्वती) हैं, गन्ध-अक्षतों से अलंकृत हैं, गङ्गा हैं, गौतम और गर्ग मुनि से वन्दित चरणोंवाली हैं, गो-स्वरूपा हैं, गौतमी हैं, गोमती हैं गौरी हैं और गर्व एवं गुरुता से परिपूर्ण जिनका यौवन है— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥१९॥

घण्टा-शङ्ख-धरां घन-स्तन-भरां घण्टा-निनाद-प्रियाम्।
घर्मघ्नां करुणा-कटाक्ष-लहरीं घोरासुरोच्चाटिनीम्॥
घां-घ्राणां घटिकां प्रसिद्ध-घुटिकां घ्रूणांघ्रुणोचिद्-घनाम्।
घातां दुष्ट-दुरासदां घन-कचां देवीं त्रिवेणीं भजे॥२०॥

जो घण्टा और शङ्ख धारण करती हैं, जिनके स्तन सघन एवं स्थूल हैं, जिन्हें घण्टा का शब्द प्रिय है, जो पाप का नाश करनेवाली हैं, दया-दृष्टि की लहर फेंकनेवाली हैं, भयङ्कर राक्षसों का उच्चाटन करनेवाली हैं, जिनकी नासिका लम्बी है, जो ज्ञान-स्वरूपा हैं, जिनके पास दुष्ट लोग नहीं पहुँच सकते और जिनके बाल सघन हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥२०॥

ज्ञानाज्ञान-विवर्द्धिनीं गुण-निधिं श्रीराज-राजेश्वरीम्।
ज्ञानानन्द-विचार-मुक्ति-फलदां ज्ञानेश्वरीं गोचरीम्॥
ज्ञानाक्षीं सुजनां सुरासुर-नतां प्रज्ञान-दीपांकुराम्।
ज्ञानाढ्यां कमलां कलङ्क-रहितां देवीं त्रिवेणीं भजे॥२१॥

जो ज्ञान और अज्ञान को बढ़ानेवाली हैं, गुणों की निधि हैं, राजाओं के राजा की भी शासिका हैं, ज्ञान, आनन्द, विवेक एवं मोक्ष को देनेवाली हैं, ज्ञानेश्वरी हैं, इन्द्रिय-गम्य हैं, ज्ञान की नेत्र हैं, सुन्दर व्यक्तित्व से पूर्ण हैं, सुर तथा असुरों की आराधनीया हैं, ज्ञान-रूपी दीपक की ज्योति हैं, ज्ञान से सम्पन्न हैं, लक्ष्मी-स्वरूपा एवं कलङ्क से रहित हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥२१॥

चन्द्रार्काग्नि-लसत्-त्रिनेत्र-कलितां चक्राधिराज-स्थिताम्।
चन्द्राग्नि-स्तन-भार-शोभन-वतीं चन्द्रार्क-ताराङ्किनीम्॥
चेतः-सद्मनि योगिनां विहरिणीं चित्सन्न-मोद-प्रदाम्।
चक्राधीश्वर-सद्म-मध्य-निलयां देवीं त्रिवेणीं भजे॥२२॥

जो चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि-रूपी तीन नेत्रों से सुशोभित हैं, तीर्थ-राज में स्थित हैं, चन्द्र और अग्नि-रूपी स्तनों के भार से सुशोभित हैं, चन्द्र, सूर्य और तारा के चिह्नों से युक्त हैं, योगियों के चित्त में विहरण करनेवाली हैं, ज्ञान तथा आनन्द को देनेवाली और तीर्थ-राज प्रयाग के भवन में निवास करनेवाली हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥२२॥

छायामात्म-विदां चराचर-गतां छत्राधि-राजेश्वरीम्।
छन्दोभिर्विविधैर्वरैस्सह - चरां चर्चा-भयच्छेदिनीम्॥
छन्नास्व-प्रभयां समस्त-जगतां चामीकरा-भासिनीम्।
छिन्नामासुर-कोटि-कोटि-शिरसां देवीं त्रिवेणीं भजे॥२३॥

जो आत्म-ज्ञानियों की छाया हैं, चराचर में व्याप्त हैं, छत्र-सुशोभित साम्राज्ञी हैं, विविध प्रकार के उत्तम छन्दों के साथ चलनेवाली हैं, स्मरण-मात्र से भय का नाश करनेवाली हैं, अपनी प्रभा से सम्पूर्ण जगत् को प्रकाशित करनेवाली हैं, सुवर्ण के समान चमकनेवाली हैं और करोड़ों असुरों के सिरों का छेदन करनेवाली हैं, उन **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥२३॥

जम्बू-द्वीप निवासिनीं जय-करीं जाड्यान्धकारापहाम्।
जल्पां जन्म-विवर्जितां जलधिजां ज्वाला-जगज्जीवनीम्॥
जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्तिषु स्फुट-तरां ज्वालामुखीं जानकीम्।
जम्भाराति-समर्चिताङ्घ्रि-युगलां देवीं त्रिवेणीं भजे॥२४॥

जो जम्बू-द्वीप की निवासिनी हैं, जय प्रदान करनेवाली हैं, अज्ञानता-रूपी अन्धकार का नाश करनेवाली हैं, स्पष्ट वक्ता हैं, जन्म-मरण से रहित हैं, समुद्र में उत्पन्न हैं, ज्वाला-स्वरूपा हैं, संसार को जिलानेवाली हैं, जागृति, स्वप्न एवं सुषुप्ति— तीनों अवस्थाओं में प्रकाशित होनेवाली हैं, ज्वाला-मुखी हैं, जानकी हैं और इन्द्र जिनके चरण-कमलों की पूजा करते हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥२४॥

ॐ-कारामुष - लोचनामुल-मुलां जाड्यान्ध-कारापहाम्।
ॐ-ॐकार-उषध्वजाम्मु-नमनां जालन्ध्र-पीठ-स्थिताम्।।
ॐ-ॐ-ॐ-कृत नूपुराञ्चित-पदां जाज्वल्य-मान-प्रभाम्।
कान्तस्थां झटिति प्रसाद-करणीं देवीं त्रिवेणीं भजे।।२५।।

जो ॐ-कार-स्वरूपा हैं, जिनके नेत्र दीप्ति-मान हैं, जो उल-उल-शब्द से युक्त हैं, अज्ञान-रूपी अन्धकार का नाश करनेवाली हैं, ॐकार जिनका ध्वज है, जो 'उन-उन' शब्द से युक्त हैं, 'जालन्ध्र' के पीठ पर स्थित हैं, 'ॐॐॐ' शब्द करनेवाली पायल से जिनके चरण सुशोभित हैं, जिनकी कान्ति ज्राज्चल्यमान है, जो स्मरणीय वाहन पर स्थित हैं, जो शीघ्र प्रसन्न होनेवाली हैं — ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।२५।।

या याकार-विराजितां य-य-नखां निर्मानसीं निष्क्रियाम्।
निद्रां निर्विषयां चिदम्बर-समां निर्मत्सरां निर्ममाम्।।
निर्द्वन्द्वां प्रथमां प्रबन्ध-करणीं पञ्चाक्षरीं पार्वतीम्।।
निश्चिन्तां विमलां नरेन्द्र-विनुतां देवीं त्रिवेणीं भजे।।२६।।

जो 'या'-'या' के स्वरूप में विराजमान हैं, 'य' और 'य' के समान नखवाली हैं, मन की (चञ्चल) वृत्ति से रहित हैं, क्रिया से शून्य हैं, निद्रा और विषयों से रहित हैं, चित्-स्वरूपा हैं, आकाश के समान स्वच्छ हैं, ईर्ष्या एवं ममता से रहित हैं, निर्द्वन्द्व हैं, आद्या-शक्ति हैं, सबका प्रबन्ध करनेवाली हैं, ''नमः शिवाय'' के पञ्चाक्षर मन्त्र में निवास करनेवाली हैं, पार्वती हैं, निश्चिन्त हैं, राजाओं से स्तुत्य हैं— ऐसी **त्रिवेणी-देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।२६।।

टङ्का-भासुर-भूभृतां विजयिनीं विश्वाधिकां सौख्यदाम्।
विख्यातां वर-वीर-वाग्भव-लतां वागु-बोधिनीं वासुकीम्।।
विश्वामित्र-समर्चितां विष-हरां विद्याश्रितां वैष्णवीम्।
वीरामर्जुन - भीम - धर्म-विनुतां देवीं त्रिवेणीं भजे।।२७।।

जो केवल शब्द-नाद से राक्षसों और राजाओं पर विजय प्राप्त करनेवाली हैं, विश्व-वरेण्य हैं, सुख-दायिनी हैं, प्रसिद्ध हैं, श्रेष्ठ वीरों की वाणी-रूपी लता हैं, वाणी का बोध करानेवाली हैं, वासुकी हैं, विश्वामित्र से पूजित हैं, विषों का हरण करनेवाली हैं, विद्या से सेवित हैं, वैष्णवी हैं, वीर अर्जुन और भीम के धर्म से समन्वित हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।२७।।

टंताराधिप - सेवितांघ्रि - युगलां बैकुण्ठ-लोकाधिपाम्।
विज्ञानां विरजां विशाल-महिमां वीणा-धरां वारुणीम्।।
वाणी-वासव-वन्दितां सुख-करां वागु-बोधिनीं वामनाम्।
कालां काम-कला-वतीं कवि-नुतां देवीं त्रिवेणीं भजे।।२८।।

जिनके दोनों चरणों की सेवा चन्द्रमा करते हैं, जो बैकुण्ठ-लोक की स्वामिनी हैं, विज्ञान-स्वरूपा हैं, कालुष्य से रहित हैं, जिनकी महिमा अपार है, जो वीणा को धारण करती हैं, वरुण की प्रिय हैं, सरस्वती एवं इन्द्र से वन्दित हैं, सुख देनेवाली हैं, वाणी का बोध करानेवाली हैं, सुन्दरी हैं, काल-स्वरूपा हैं, काम-कला में निपुण हैं तथा कवियों द्वारा स्तुत्य हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।२८।।

डाकिन्यादिभिरावृतां धवलिनीं डाल्यादि-संसेविताम्।
रक्षो-द्रावण-कारिणीं दनुजहां ॐकारिणीं डामरीम्।।
दीर्घाङ्गीं दिविजां दिनेश-विनुतां दीनार्ति-विच्छेदिनीम्।
दुर्गां दुर्गति-नाशिनीं दुरतिहां देवीं त्रिवेणीं भजे।।२९।।

जो डाकिनी आदि से घिरी रहती हैं, जिनका वर्ण उज्ज्वल है, डाली (मातृका-गण) आदि जिनकी सेवा करती हैं, जो राक्षसों का संहार करती हैं, दानवों का विनाश करती हैं, ॐकार-शब्द का उच्चारण करती हैं, डामर (तन्त्र-शास्त्र) जिन्हें प्रिय हैं, लम्बे अङ्गोंवाली हैं, दिव्या हैं, सूर्य जिनकी प्रार्थना करते हैं, जो दीन-दुखियों की पीड़ा हरनेवाली हैं, दुर्गा-स्वरूपा दुःखों का नाश करनेवाली हैं तथा पापों का भञ्जन करनेवाली हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।२९।।

ढक्का-नाद-विनोदिनीं विभवदां दारिद्र्य-संहारिणीम्।
ढिं-ढिं-भूषण-भूषितां ढम-ढमा-ढङ्कार-वर्णात्मिकाम्।।
ढं-ढां-ढिं-ढिम-वर्तिनीं ढल-ढलां धम्मिल्ल-संशोभिताम्।
सायुज्यां पुरुषार्थ-साधन-करीं देवीं त्रिवेणीं भजे।।३०।।

जो डमरू के शब्द से मनोरञ्जन करनेवाली हैं, धन देनेवाली हैं, दरिद्रता का नाश करनेवाली हैं, ढिम-ढिम-शब्द करनेवाले आभूषणों से विभूषित हैं, ढम-ढमा-ढम शब्द करनेवाले अक्षरों की आत्मा हैं, ढं-ढां-ढिं-ढिं-शब्द के साथ नृत्य करनेवाली हैं, जूड़े से सुशोभित हैं और सायुज्य-मोक्ष एवं पुरुषार्थ को सिद्ध करनेवाली हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।३०।।

णकारां नव-नान्त-दिव्य-हृदयां नीलाम्बरालंकृताम्।
नीलां नीरज-लोचनां निगमगां निरेश्वरीं नीरजाम्।।
नीलाङ्गीं नल-सेवितां कुवलयां कोलाहलां कोमलाम्।
नीलाराधित-पाद-पङ्कज-युगां देवीं त्रिवेणीं भजे।।३१।।

जिनके नाम में 'ण' या 'न' अक्षर और 'त' एवं 'व' अक्षर जुड़े हुए हैं, जिनका हृदय दिव्य है, जो नील-वस्त्र से सुशोभित हैं, जिनका वर्ण नील है, नेत्र कमल के समान हैं, वेदों में जिनकी गति है, जो जल की स्वामिनी हैं, जल से उत्पन्न हैं, 'नल' नामक बन्दर से सेवित हैं, कमल के समान हैं, कोलाहल-प्रिय हैं, कोमल हैं और जिनके दोनों चरणारविन्दों की सेवा 'नील' नामक वानर ने की थी— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।३१।।

तारां ताण्डव-साक्षिणीं तनु-लतां तन्त्र-त्रयाधीश्वरीम्।
तन्वीं तत्व-निधिं तपः-फल-करीं ताम्बूल-राजन्मुखीम्।
तत्त्वज्ञां तरुणीं तरान्तर-गतां ताप-त्रय-ध्वंसिनीम्।
तारा-हार-विराजित-स्तन-तलां देवीं त्रिवेणीं भजे।।३२।।

जो तारण (उद्धार) करनेवाली स्वयं तारा-देवी हैं, ताण्डव-नृत्य की साक्षिणी हैं, सुन्दर शरीरवाली हैं, तीनों तन्त्र (तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र-शास्त्र) की अधीश्वरी हैं, तन्वी हैं, तत्त्व की निधि हैं, तपस्या का फल देनेवाली हैं, जिनका मुख ताम्बूल से सुशोभित है, जो तत्त्व-ज्ञात्री हैं, तरुणी हैं, तीनों प्रकार (दैहिक, दैविक, भौतिक) के तापों का ध्वंस करनेवाली हैं और जिनके स्तन-तट पर ताराओं की माला विराजमान हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता।।३२।।

थ-थत्थैय - थ-थत्थैय-शब्द-रचनैर्माङ्गल्य-गीतोज्वलैः।
सौन्दर्याप्सरसा-लसन्मृग-दृशां नृत्यै-र्विराजत्-सभाम्।।
थं-तत्त्वावरणां तटोप-तटिनीं तत्-सिद्धिदां तारिणीम्।
चातुर्या परिपूर्ण-चन्द्र-वदनां देवीं त्रिवेणीं भजे।।३३।।

"थ-थ-थैय्या"— इस प्रकार के शब्दों से ताल देकर माङ्गलिक गीत गाती एवं नाचती हुई सुन्दरी अप्सराएँ जिनकी सभा की शोभा बढ़ाती हैं, जो तत्त्व-ज्ञान से आवृत हैं, तटों एवं उप-तटों से युक्त हैं, सिद्धि की दात्री हैं, तारण करनेवाली हैं, चतुरता से परिपूर्ण हैं तथा चन्द्र-मुखी हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।३३।।

दक्षां दैन्य-निवारिणीं दुरुगला दक्षेश्वर-ध्वंसिनीम्।
दिव्यां द्रव्य-समृद्धिदां दिन-मणिं दुतां दुराधर्षिणीम्।।
दीक्षां दानव-दाहिनीं सम-धियां दिव्याम्बरालंकृताम्।
दौहित्रीं दुहितां द्युतिं त्रिपथगां देवीं त्रिवेणीं भजे।।३४।।

जो दक्ष हैं, दीनता का निवारण करनेवाली हैं, दक्ष के यज्ञ का ध्वंस करनेवाली हैं, दिव्या हैं, धन-समृद्धि देनेवाली सूर्य के समान प्रचण्ड हैं, दीक्षा-स्वरूपा हैं, दानवों को जलानेवाली हैं, सम-भाव रखनेवाली हैं, दिव्य वस्त्र एवं अलङ्कारों से सुसज्जित हैं, दौहित्री हैं, दुहिता हैं, कान्ति-स्वरूपा हैं और तीनों मार्गों पर चलनेवाली हैं— ऐसे **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।३४।।

धन्यां धन्य-तरां धनाधन-करां धर्मार्थ-काम-प्रदाम्।
धर्मज्ञां धरणीं धनाधिप-नुतां धर्म-स्थितां धीमतीम्।।
धर्माधर्म-फल-प्रदां धन-वतीं धीराध्वनिं धीमिताम्।
धारा-ध्रां ध्रुव-पूजितां ध्रुव-पदां देवीं त्रिवेणीं भजे।।३५।।

जो धन्य हैं, धन्य से बढ़कर हैं, धन और धनाभाव दोनों ही करनेवाली हैं, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष प्रदान करनेवाली हैं, धर्मज्ञा हैं, धारणा करनेवाली पृथ्वी-स्वरूपा हैं, कुवेर से पूजित हैं, धर्म में स्थित हैं, बुद्धि-मती हैं, धर्म और अधर्म के फलों को देनेवाली हैं, धन-वती हैं, धीमानों की गम्भीर ध्वनि हैं, प्रखर धारा से युक्त हैं, ध्रुव से पूजित हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।३५।।

नादान्तां नव-यौवनां नव-रसां नाद-प्रियां नादिनीम्।
नाना-वेष-धरां नगाधिप-नुतां नारायणीं नर्मदाम्।।
नागेन्द्राभरणां नदी-नद-नुतां नित्यां निधिं निर्मलाम्।
निक्षेपां निखिलां निजां निरवधीं देवीं त्रिवेणीं भजे।।३६।।

जिनके अन्त में नाद है, जो नव-यौवना हैं, नवों रसोंवाली हैं, नाद जिन्हें प्रिय हैं, जो नाद से युक्त हैं, नाना प्रकार के वेश धारण करनेवाली हैं, नाग-राज से स्तुत हैं, नारायणी हैं, विनोद करनेवाली हैं, नागों के आभूषण से सुशोभित हैं, नदियों और नदों से स्तुत हैं, नित्य हैं, निधि हैं, निर्मल हैं, निक्षेप (धरोहर) स्वरूप हैं, सर्व-स्वरूपा हैं, स्वयं सब कुछ हैं, निःसीम हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।३६।।

पश्यन्तीं पर-देवतां पुर-हरां पापौघ-विध्वंसिनीम्।
प्राणां पद्म-धरां प्रयाग-निलयां पाकारि-संसेविताम्।।
प्रत्यक्षां प्रणवां पुराण-पुरुषां प्राणेश्वरीं पद्मिनीम्।
बन्धूक-प्रसवारुणां वर-धरां देवीं त्रिवेणीं भजे।।३७।।

जो दूसरे देवताओं को भी देखती हैं, त्रिपुरासुर का हरण करनेवाली हैं, पाप-समूह का विध्वंस करनेवाली हैं, प्राण-स्वरूपा हैं, कमल-धारिणी हैं, प्रयाग में निवास करनेवाली हैं, इन्द्र से परि-सेवित हैं, प्रत्यक्ष हैं, प्रणव हैं, पुराण-पुरुष हैं, प्राणेश्वरी हैं, पद्मिनी हैं, बन्धूक (गुल-दुपहरिया) फूल के समान लाल हैं और 'वर' नामक मुद्रा धारण करनेवाली हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।३७।।

फालाक्षां भ्रमरां भ्रमापहरिणीं भ्रान्ताज्ञ-दूरी-कृताम्।
भासां भास्कर-सेवितां फणि-धरां फाकार-तत्त्व-प्रभाम्।।
भ्रष्ट-क्लेश-विनाशिनीं भुग-भुगां भोग-प्रदां भोगिनीम्।
भोगीन्द्राभरणां फलाफल-करां देवीं त्रिवेणीं भजे।।३८।।

जिनके नेत्र विशाल हैं, जो भ्रमर के समान हैं, भ्रम का निवारण करनेवाली हैं, अज्ञानता को दूर करनेवाली हैं, कान्ति-मती हैं, सूर्य से सेवित हैं, सर्प धारण करनेवाली हैं, 'फ'-अक्षर जैसी आकृतिवाली हैं, तत्त्वों से जगमगाती हैं, क्लेश का विनाश करनेवाली हैं, भोग प्रदान करनेवाली हैं, भोगिनी हैं, साँपों के आभूषणों से विभूषित हैं एवं सुफल तथा कुफल— दोनों को देनेवाली हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।३८।।

बालां वाम-शशाङ्क-वद्ध-मुकुटां पद्मासनाधिष्ठिनीम्।
भेदाभेद-विभेद-भेदन-करीं बाधापहा-ब्राह्मणीम्॥
बोधाबोध-बलां बुधार्चित-पदां बुद्धि-प्रदां बोधिनीम्।
ब्रह्मास्त्रां बगलां बल-प्रमथिनीं देवीं त्रिवेणीं भजे॥३९॥

जो बाला हैं, जिनका मुकुट वक्र-चन्द्र से सुशोभित हैं, जो पद्मासन पर विराजमान हैं, जो भेदाभेद को मिटानेवाली हैं, बाधाओं को दूर करनेवाली हैं, ब्राह्मणी हैं, बोधाबोध तथा बल-स्वरूपा हैं, जिनके चरणों की पूजा बुद्धिमान् लोग किया करते हैं, जो बुद्धि देनेवाली हैं, बोध करानेवाली हैं, ब्रह्मास्त्रा हैं, बगलामुखी देवी हैं और दुष्ट बल का मन्थन करनेवाली हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥३९॥

भव्यां भक्ति-वशां भवाब्धि-तरणीं भामां भवानीं भवाम्।
भद्रां भाग्य-वरां भयापहरणीं भक्ति-प्रियां भारतीम्॥
भाषां भानु-मतीं भगाक्ष-निहतां भ्रान्तां जगद्-भावनाम्।
भर्गां भार्गव-सन्नुतां भगवतीं देवीं त्रिवेणीं भजे॥४०॥

जो भव्य हैं, भक्ति से वशीभूत होनेवाली हैं, संसार-रूपी सागर पार करने के लिए नौका के समान हैं, भामा हैं, संसार की भवानी हैं, भद्रा हैं, उत्तम भाग्यवाली हैं, भय का अपहरण करनेवाली हैं, भक्ति-प्रिय हैं, भारती हैं, भाषा हैं, भानु-मती हैं, इन्द्र-कर्मों को और संसार की भ्रान्त भावनाओं को निहत करनेवाली हैं, तेज-स्वरूपा हैं और परशुरामजी से स्तुत हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥४०॥

मायां मङ्गल-दायिनीं मनसिजां माहेश्वरीं माधुरीम्।
माहेन्द्रीं मकर-ध्वजां मधु-मतीं मन्द-स्मितोद्यन्मुखीम्॥
मुक्तां मां मद-लालसां मलयजां माया-वतीं मानिनीम्।
मीनाक्षीं महतीं महेश्वर-नुतां देवीं त्रिवेणीं भजे॥४१॥

जो माया हैं, मङ्गल-दायिनी हैं, मन से उत्पन्न होनेवाली हैं, शिव की प्रिया हैं, माधुरी हैं, इन्द्राणी हैं, मकर-ध्वजा हैं, मधु-मती हैं, जिनका मुख मन्द मुस्कान से सुशोभित है, जो मुक्त-स्वरूपा हैं, लक्ष्मी हैं, मद-लालसा हैं, मलय-पर्वत से उत्पन्न हैं, मायावती हैं, मानिनी हैं, मछली के समान नेत्रोंवाली हैं, महान् हैं और शिव से स्तुत हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥४१॥

यात्रा-सिद्धि-करीं यशः-सुख-करीं यात्रोत्सवा-यातुनाम्।
यज्ञाङ्गां यम-सन्नुतां यत-नदीं यज्ञार्चितां योगिनीम्॥
यामा-यक्ष-समर्चितां यति-नतां यन्त्र-स्थितां यामिनीम्।
यलायल - कृताध-मारि-विनुतां देवीं त्रिवेणीं भजे॥४२॥

जो यात्रा को सुफल बनानेवाली हैं, यश और सुख प्रदान करनेवाली हैं, यात्रा में उत्सव प्रदान करनेवाली हैं, यज्ञ की अङ्ग-स्वरूपा हैं, यम-राज से भली-भाँति स्तुत हैं, नदियों का भली-भाँति संयमन करनेवाली हैं, यज्ञ में पूजित होनेवाली हैं, यज्ञों द्वारा पूजित हैं, साधुओं के द्वारा नमस्कृत हैं, रात्रि में यन्त्र पर स्थित हैं, (तन्त्रानुसार 'यन्त्र' पर स्थित) और यत्न-पूर्वक 'या'-लीला से नीचे दिखाए हुए शत्रु द्वारा प्रणत हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥४२॥

राज्ञीं राज-सुपूजितां रघु-नतां रामां रमां राकिनीम्।
राका-चन्द्र-मुखीं रसां रस-वतीं राज्य-प्रदां रागिणीम्॥
राधा-रक्षण-तत्परां रवि-नुतां रम्भां रथान्तः-स्थिताम्।
राधा-रत्न-किरीट-कुण्डल-धरां देवीं त्रिवेणीं भजे॥४३॥

जो राजा-रानियों से सु-पूजित हैं, रघु से स्तुत हैं, रामा हैं, लक्ष्मी हैं, पूर्णिमा की रात्रि को चाहनेवाली हैं, पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान सुखवाली हैं, पृथ्वी-स्वरूपा हैं, रस-वती हैं, राज्य देनेवाली हैं, रागिणी हैं, राधा की रक्षा करने में तत्पर रहनेवाली हैं, सूर्य से स्तुत हैं, हाथी से युक्त रथ पर स्थित हैं और रत्न एवं रत्न से भिन्न वस्तु का मुकुट तथा कुण्डल धारण करनेवाली हैं — ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥४३॥

लक्ष्मी-लक्षण-लक्षितां लव-लवा लाक्षारुणांघ्रि-द्वयाम्।
लक्ष्यां लक्ष्मण-सेवितां लघु-तरां लास्य-प्रियां लाकिनीम्।
लक्ष्यार्थां ललितां लसत्-कुच-भरां तन्वीं लघु-श्यामलाम्।
लावण्यां लय-वर्जितां सु-ललनां देवीं त्रिवेणीं भजे॥४४॥

जो लक्ष्मी के लक्षणों से सम्पन्न हैं, जिनके दोनों चरण महावर के समान लाल हैं, जो देखने योग्य हैं, लक्ष्मण द्वारा सेवित हैं, अत्यन्त सूक्ष्म हैं, नृत्य-प्रिय हैं, योगिनी हैं, प्रयोजन सिद्ध करनेवाली हैं, ललित हैं, कुचों के भार से शोभाय-मान हैं, सूक्ष्मा हैं, किञ्चित् श्याम-वर्णा हैं, सौन्दर्य-मयी हैं और नाश से रहित हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥४४॥

वाशिष्ठां वसुधां वरां वसु-मतीं वागर्थ-विज्ञानदाम्।
वाराहीं वरुणां वराभय-करां वागीश्वरीं वाग्भवीम्॥
वश्याकर्षण-वाग्-विलास-करणीं वाक्-सिद्धि-सम्पत्-करीम्।
वामाक्षीं बरदां वदान्य-विभवां देवीं त्रिवेणीं भजे॥४५॥

जो वशिष्ठजी से स्तुत हैं, पृथ्वी-स्वरूपा हैं, वसु-मती हैं, वाणी, अर्थ तथा विज्ञान को देनेवाली हैं, वराह-रूप-धारी विष्णु की शक्ति हैं, वरुणा हैं, वर और अभय नामक मुद्राओं को हाथों में धारण करनेवाली हैं, वाणी की ईश्वरी हैं, वाणी से उत्पन्न होनेवाली हैं, वशीकरण, आकर्षण तथा वाणी का वैभव प्रदान करनेवाली हैं, वाक्-सिद्धि एवं सम्पत्ति देनेवाली हैं, वामाक्षी हैं, वर देनेवाली हैं, महा-दानी हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥४५॥

श्यामां चक्र-धरां शशाङ्क-वदनां शत्रु-क्षयां शारदाम्।
शास्त्रां शास्त्र-करां शमाशम-करां शङ्खेन्दु-कुन्दोज्ज्वलाम्॥
शान्तां प्रांश-वरीं शताक्षर-मयीं शेषादि-संसेविताम्।
शङ्का-टङ्क-विदारिणीं शशि-कलां देवीं त्रिवेणीं भजे॥४६॥

जो श्यामा हैं, चक्र धारण करनेवाली हैं या मन्त्र-शास्त्र के अनुसार 'चक्र-पूजन' में बैठनेवाली हैं, चन्द्र-मुखी हैं, शत्रुओं का क्षय करनेवाली हैं, सरस्वती हैं, शास्त्र-स्वरूपा हैं, स्वयं शास्त्रों को बनानेवाली हैं, शान्ति और अशान्ति— दोनों ही उत्पन्न करनेवाली हैं, शङ्ख, चन्द्रमा एवं कुन्द-पुष्प के समान उज्ज्वल हैं, शान्त हैं, शताक्षर-मयी हैं, शेष आदि से संसेवित हैं, शङ्काओं का उन्मूलन करनेवाली हैं और चन्द्रमा की कला के समान हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।४६।।

षड्-योगैर्विहितां षडर्थ-सहितां षाड्-गुण्य-सम्भाविताम्।
षट्-चक्रोर्ध्व-गतां षडध-विनतां षट्-कूल-मध्य-स्थिताम्।।
षट्-कर्मातुरतां षडूर्मि-रहितां षड्-दर्शनाधिष्ठिताम्।
षड्-योगिन्याभि-सेविताधि-युगलां देवीं त्रिवेणीं भजे।।४७।।

योगाभ्यास से प्रयुक्त छः प्रकारों से जिनकी उपासना की जाती है, जो छः प्रकार के अर्थों से युक्त हैं, षड्-गुणों (उपाय, सन्धि आदि) से सम्मानित हैं, षट्-चक्र (मूलाधार, स्वाधिष्ठान आदि) के द्वारा ऊर्ध्व-गामिनी हैं, छः कूलों के मध्य में (गङ्गा + यमुना + सरस्वती = २ × ३ = ६) स्थित हैं, षट्-कर्मों (मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण) के करने में व्यग्र रहती हैं, छः ऊर्मियों (भूख, प्यास आदि से) रहित हैं, छः दर्शनों (सांख्य, वेदान्त आदि) की आधार-शिला हैं और छहों योगिनियाँ जिनके चरणों की सेवा निरन्तर करती रहती हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।४७।।

सर्वज्ञां सकलार्थदां सम-रसां सौभाग्यदां स्वामिनीम्।
सर्वानन्द-मयीं समस्त-जननीं सम्मोहिनीम् सुन्दरीम्।।
स्वस्थां सर्व-फल-प्रदां समयिनीं सौभाग्य-विद्येश्वरीम्।
साकारां समयेश्वरीं सु-मनसां देवीं त्रिवेणीं भजे।।४८।।

जो सर्वज्ञा हैं, सभी प्रयोजनों को सिद्ध करनेवाली हैं, एक रसवाली हैं, सौभाग्य देनेवाली हैं, स्वामिनी हैं, सबको आनन्द देनेवाली हैं, सबकी जननी हैं, सबको मोहित करनेवाली हैं, सुन्दरी हैं, स्वस्थ हैं, सभी फलों की दात्री हैं, समय की अपेक्षा करनेवाली हैं, सौभाग्य और विद्या की ईश्वरी हैं, साकार हैं, समयेश्वरी हैं और सुन्दर मनवाली हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।४८।।

हव्याज्यैरभि-पूजितां हल-धरां हं-क्षं-स्थलाधीश्वरीम्।
हंसा-हंस-गतिं हतासुर-गतिं हस्तीन्द्र-कुम्भ-स्तनीम्।।
हस्ते पुस्तक-धारिणीं हरि-हर-ब्रह्मात्मिकां हस्तिनीम्।
हस्तीन्द्रानन-वन्दितांघ्रि-युगलां देवीं त्रिवेणीं भजे।।४९।।

हवनीय घृतों से जिनकी पूजा की जाती है, जो हल को धारण करनेवाली हैं, **'हं'** और **'क्षं'** अक्षरों के स्थान की अधीश्वरी हैं, 'हंस' और 'हंस' से भी इतर जिनकी गति है, जो असुरों की गति को विनष्ट करनेवाली हैं, गज-राज के कुम्भ-स्थल के समान जिनके स्तन हैं, जो हाथ में पुस्तक धारण किए हुई हैं, ब्रह्मा, विष्णु एवं शङ्कर को भी अपने हाथों में लिए हुए हैं, गणेश जिनके दोनों चरणों की वन्दना करते हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।४६।।

लं-तत्त्वार्चित-पाद-पद्म-युगलां लक्ष्यागमार्धातुगाम्।
लक्ष्यालक्ष्य-विलक्ष्य-लक्षण-वतीं लक्ष्यार्थ-संसिद्धिताम्।।
लीला-लोल-विलास-कज्जल-लसन्नेत्र-त्रयां चिन्मयीम्।
लाकारां शरदेन्दु-सुन्दर-मुखीं देवीं त्रिवेणीं भजे।।५०।।

'लं'-तत्त्व से जिनके दोनों चरणारविन्दों की पूजा की जाती है, लक्ष्य-शास्त्र में जिनकी प्रवृत्ति है, जो लक्षणा के योग्य, लक्षण के न योग्य और विशिष्ट लक्षण के योग्य लक्षणों से समन्वित हैं, लक्ष्य-अर्थ की सिद्धि देनेवाली हैं, जिनके तीनों नेत्र लीला से चञ्चल और बिलास एवं काजल से सुशोभित हैं, जो चित्-स्वरूपा हैं, **'लं'** अक्षर की आकृति-जैसी हैं, और शरच्चन्द्र के समान सुन्दर मुखवाली हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।५०।।

क्षत्रां क्षात्र-विशारदां क्षत-धरां क्षौमाम्बरालंकृताम्।
क्षुद्रोपद्रव-नाशिनीं क्षय-हतां क्षामापहां क्षेमदाम्।।
क्षुत्-तृष्णाऽप-हतां क्षितीश-विनुतां क्षेत्रां क्षिति-क्षेत्रगाम्।
क्षेत्रज्ञां सुगमार्क्ष-वर्ण-पृथिवीं देवीं त्रिवेणीं भजे।।५१।।

जो क्षात्र-धर्म का अवलम्बन करनेवाली हैं, युद्ध-विद्या में निपुण हैं, घावों को धारण करनेवाली हैं, रेशमी वस्त्र से अलंकृत हैं, क्षुद्रों द्वारा किए हुए उपद्रवों का नाश करनेवाली हैं, क्षय और क्षीणता को दूर करनेवाली हैं, कल्याण करनेवाली हैं, भूख-प्यास को मिटानेवाली हैं, राजाओं से नमस्कृत हैं, क्षेत्र-स्वरूपा हैं, पृथ्वी-स्वरूपा हैं, क्षेत्र-गामिनी हैं, क्षेत्र को जाननेवाली हैं और धरती की धुरी के समान हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ।।५१।।

अ-आ-दिव्य-शिरो-मुखाब्ज-ललितां 'इ'-'ई'-सुनेत्रां उ-'ऊ'—
कर्णां 'ऋ'-'ॠ'-सुनासिका-सुरचना 'ऌ'-'ॡ'-कपोल-द्वयाम्।।
'ए-ऐ'-ओष्ठ-युगां परात्पर-तरां 'ओ-औ'-सुदन्तोज्ज्वलाम्।
अ-मूर्ध्वां कलितां असर्ग-रसनां देवीं त्रिवेणीं भजे।।५२।।

जिनके 'अ' और 'आ' दिव्य मस्तक, 'इ' और 'ई' सुन्दर नेत्र, 'उ' और 'ऊ' कान हैं, 'ऋ' और 'ॠ' सुडौल एवं सुन्दर नाक हैं, 'लृ' और 'ॡ' दोनों गाल हैं, 'ए' और 'ऐ' दोनों ओठ हैं, 'ओ' और 'औ' सुन्दर चमकते हुए दाँत हैं, 'अं' मूर्धा तथा 'अः' जीभ है और जो श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ हैं— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥५२॥

कं-खं-गं-घं-ङं-दक्ष-बाहु-कमलां चं-छं-जं-झं-ञान्विताम्।
वामां वाम-करां वशिष्ठ-विनुतां टं-ठं-डं-ढं-णान्विताम्॥
दक्षांघ्रि-तथदधनार्चित-पदां वामाख्य-विद्याऽऽश्रिताम्।
पं - फाकार-कटि-प्रदेश-रचितां देवीं त्रिवेणीं भजे॥५३॥

'कं खं गं घं' और 'ङं' बीज-मन्त्रों से जिनकी दाहिनी भुजा सुरक्षित है, चं छं जं झं और 'ञं' से जिनकी बाँईं भुजा लक्ष्मी के समान है, वशिष्ठ ने जिनकी स्तुति की है, 'टं ठं डं ढं' और 'णं' से युक्त जिनका दाहिना पैर है, 'तं थं दं धं नं' से जिनके चरणों की पूजा की जाती है, जो ('वाम-मार्ग' नामक तन्त्र-विद्या) के ज्ञान पर आश्रित हैं, 'पं' तथा 'फं' के आकार से जिनके कटि-भाग की रचना की गई है— ऐसी **त्रिवेणी देवी** की मैं वन्दना करता हूँ॥५३॥

इदं त्रिवेण्या प्रयतः पुनात्मा, स्तोत्रं पठेत् साधु समाहितात्मा।
तस्यार्थ-कामाः सकला भवेयुः, सिद्धा ध्रुवं नात्र वितर्कणा स्यात्॥५४॥

जो मनुष्य पवित्र एवं सावधान होकर इस **'त्रिवेणी-स्तोत्र'** का पाठ करेंगे, उनकी सकल कामनाएँ निश्चित रूप से सिद्ध होंगी— इसमें सन्देह नहीं॥५४॥

॥श्रीत्रिवेणी-देवी-स्तोत्रं॥

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्रीजयदेव मिश्र 'जपाचार्य'

विशेष— श्लोक ५२ और ५३ में **'वर्ण-माला'** के सभी बीज-मन्त्रों से भगवती त्रिवेणी देवी की आराधना की गई है। **'वर्ण-माला'** में ही समस्त **बीज-मन्त्र** एवं **संसार की सारी विद्या एवं अविद्या** निहित हैं। अतः यदि सम्पूर्ण पाठ भक्त-जन न कर सकें, तो केवल इन्हीं दो श्लोकों (५२-५३) का पाठ कर लेने से पूर्ण फल का लाभ कर सकते हैं।

श्रीत्रिवेणी-स्तोत्र

प्रस्तुत **'श्रीत्रिवेणी-स्तोत्र'** भगवती की असीम अनुकम्पा से **'तीर्थ-राज-प्रयाग'**-निवासी **श्रीस्वामी जयदेव जी मिश्र** को प्राप्त हुआ था। **श्रीमिश्र जी** ने स्वयं इस सन्दर्भ में इस प्रकार लिखा है—

''...**'श्रीत्रिवेणी-स्तोत्र'** के **लेखक** एवं **रचना-समय** अज्ञात है, किन्तु जो रचना प्रस्तुत है वह एक **अनुपम निधि** है। सम्पूर्ण रचना 'ॐ' से लेकर **'स्वरों'** एवं **'व्यञ्जनों'** के क्रमानुसार लिखी गई है, जो **स-स्वर** एवं **माधुर्य-प्रसाद-गुण** से ओत-प्रोत है...यह स्तोत्र **भगवती जाह्नवी (गङ्गा)** के समान ही **गति-प्रवाहिनी** है। सम्पूर्ण कृति, अपने आप में बेजोड़ है....''

‘वर्ण-बीजाक्षर’ द्वारा ‘तत्त्वों’ का ज्ञान

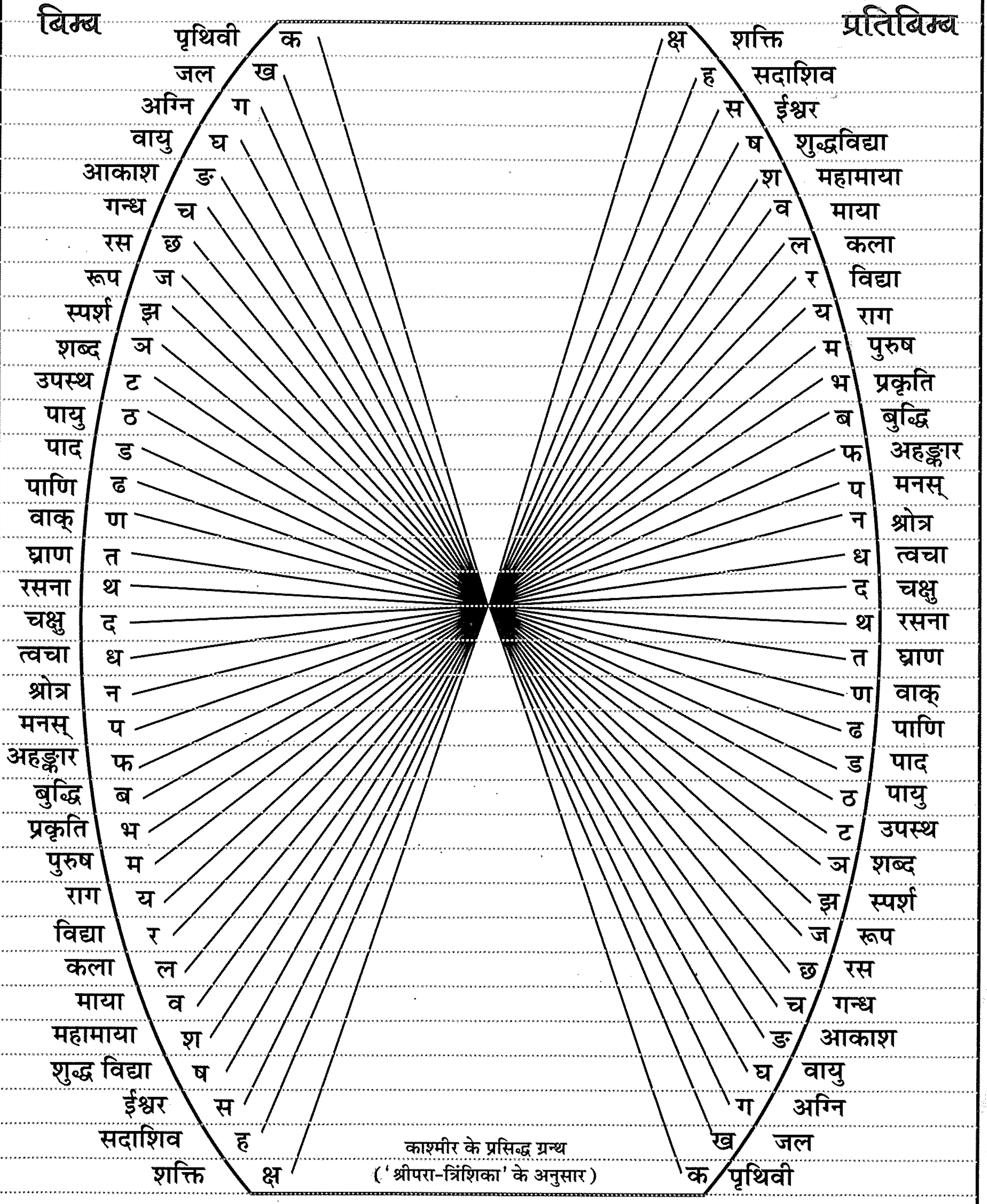

‘तत्त्वों’ के ज्ञान के द्वारा ‘पर-ब्रह्म’ का ज्ञान

(सारूप्य, सालोक्य तथा सायुज्य-मुक्ति की प्राप्ति)

रजि० सं० ३२९८१/५७

द्वि-मुखी आठ 'विमर्श'-शक्तियाँ

१. 'अं' (ब्राह्मी), २. 'कं' (माहेशी), ३. 'चं' (कौमारी),
४. 'टं' (वैष्णवी), ५. 'तं' (वाराही), ६. 'पं' (ऐन्द्री),
७. 'यं' (चामुण्डा), ८. 'शं' (महा-लक्ष्मी)।

आठ विमर्श-शक्तियों की द्वि-मुखी क्रिया

- ★ सामान्य मनुष्यों में– प्रति-क्षण नाना प्रकार के 'अच्छे-बुरे' की कल्पना करते रहन और 'ब्रह्म-रन्ध्र' में विद्यमान 'चित्-शक्ति' को पीछे रखकर, उन्हें सदा नाना प्रका के सुखों-दुःखों की अनुभूति कराते रहना।
- ★ साधकों में– 'वर्ण-बीजाक्षरों' में अन्तर्निहित 'तत्त्व'-ज्ञान की अनुभूति कराकर उन 'शिव'-भाव पर पहुँचाना।

प्रकाशक : श्रीऋतशील शर्मा, श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-६ ☎ ०९४५०२२२